हरिभूमि
हिसार-हांसी भूमि
रोहतक, रविवार 5 जुलाई 2026

12 चानौत में ग्रामीणों ने बनाई दो किलोमीटर लंबी मानव शृंखला

12 इंदिरा देवी ट्रस्ट ने युवाओं को करियर और व्यक्तित्व विकास सिखाया

खबर संक्षेप

चोरी के मुकदमे में दो को लिया प्रॉडक्शन वारंट पर

हिसार। शहर थाना पुलिस ने चोरी के मामले में दो आरोपियों को प्रोडक्शन वारंट पर लिया है। शहर थाना प्रभारी पीएसआई अमित ने बताया कि पूर्व में दर्ज वाहन चोरी के एक केस की जांच के दौरान सहायक उप निरीक्षक सुनीता ने कार्रवाई करते हुए आरोपी महाबीर कॉलोनी निवासी अजय चड्ढा व पवन को प्रॉडक्शन वारंट पर लेकर गिरफ्तार किया। उन्होंने बताया कि शहर थाना में दर्ज एक्टिवा स्कूटी चोरी के मामले में जांच के दौरान आरोपियों की संलिप्तता सामने आने पर उन्हें प्रॉडक्शन वारंट पर लिया गया। आरोपियों को अदालत में पेश किया गया जहां से उन्हे जेल भेज दिया गया।

पुलिस ने 500 लीटर लाहन किया नष्ट

हिसार। पुलिस की स्वेट टीम-2 एवं डॉग स्क्वाड ने संयुक्त कार्रवाई करते हुए गांव पीरांवाली के झाड़ियों वाले क्षेत्र में व्यापक तलाशी अभियान चलाया। अभियान के दौरान पुलिस टीम ने लगभग 500 लीटर लाहन बरामद किया। बरामद लाहन को मौके पर ही पूरी तरह नष्ट कर दिया गया तथा संबंधित व्यक्तियों के विरुद्ध कानूनी कार्रवाई की जा रही है। पुलिस का कहना है कि जिले में अवैध शराब तैयार करने, उसकी तस्करी करने अथवा किसी भी प्रकार के नशे का कारोबार करने वालों के विरुद्ध जीरो टॉलरेंस की नीति अपनाई गई है।

सदर पुलिस ने 759 ग्राम अफीम सहित एक पकड़ा

हिसार। सदर थाना पुलिस ने एक आरोपी को 759 ग्राम अफीम सहित गिरफ्तार किया है। सदर थाना प्रभारी निरीक्षक ईश्वर सिंह ने बताया कि एएसआई जयबीर सिंह अपनी पुलिस टीम के साथ क्षेत्र में गश्त पर थे। इसी दौरान मिली गुप्त सूचना पर पुलिस टीम ने मिर्जापुर-नियाणा रोड पर कार्रवाई करते हुए रोहतक जिले के गांव खेरड़ी निवासी कंवर सिंह को काबू किया। तलाशी लेने पर उसके कब्जे से 759 ग्राम अफीम बरामद हुई। पुलिस ने उस पर केस दर्ज कर लिया है।

10.660 ग्राम हेरोइन सहित एक गिरफ्तार

हिसार। शहर की 12 क्वार्टर चौकी पुलिस ने एक आरोपी को 10 ग्राम 660 मिलीग्राम हेरोइन सहित गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार किए गए आरोपी की पहचान भगत सिंह नंबर निवासी डेविड के रुप में हुई है। चौकी प्रभारी एएसआई राकेश कुमार ने बताया कि एएसआई चांदवीर अपनी पुलिस टीम के साथ क्षेत्र में गश्त पर थे। इसी दौरान उन्हें सूचना मिली कि एक व्यक्ति हेरोइन खरीदने एवं बेचने का अवैध कार्य करता है तथा नहर रोड स्थित झाड़ियों के पास नशीला पदार्थ बेचने के लिए आने वाला है।

हिसार। नोज पिन निकालती युवती।

हिसार। जूते व जुराब निकालती छात्रा।

हिसार। परीक्षा केन्द्र में जाने के लिए लगी लाइन।

हिसार। तलाशी लेते पुलिस कर्मी।

रोडवेज ने चलाई विशेष बसें, छात्रा को जीएम की बोलेरो से पहुंचाया परीक्षा केंद्र

कड़ी सुरक्षा के बीच हुई एचटेट परीक्षा 24 केंद्रों पर 6508 ने दिया एग्जाम

हिसार में शांतिपूर्ण रहा परीक्षा का पहला चरण, आज दो चरणों में होगा पेपर

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हिसार

हरियाणा अध्यापक पात्रता परीक्षा का पहला चरण शनिवार को शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न हो गया। दो दिनों में तीन चरणों में होने वाली इस परीक्षा में 22 हजार 429 परीक्षार्थियों को शामिल होना है। पहले दिन शनिवार को 24 केन्द्रों पर 7433 को परीक्षा देनी थी। इनमें से 925 परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे और 6508 ने परीक्षा दी। अब रविवार को रविवार को पहली व दूसरी शिफ्ट के तहत दो चरणों में परीक्षा होगी। पहली शिफ्ट में 11 हजार 641 व दूसरी शिफ्ट में 3355 परीक्षार्थी शामिल होंगे।

एचटेट परीक्षा शनिवार को एक शिफ्ट में दोपहर 3 बजे से 5.30 बजे तक हुई जबकि रविवार को यह दो शिफ्टों में होनी है। रविवार 5 जुलाई को प्रातःकालीन सत्र में सुबह 10 बजे से दोपहर बाद 12:30 बजे तक लेवल-2 (टीजीटी) की परीक्षा एवं सायं कालीन सत्र में दोपहर बाद 3 बजे से 5:30 बजे तक लेवल-1 (पीआरटी) की परीक्षा होनी है। परीक्षा शांतिपूर्ण ढंग से कराने व नकल रोकने के लिए जिला व पुलिस प्रशासन ने कड़े प्रबंध किए वहीं रोडवेज प्रशासन ने विशेष बसों का प्रबंध करके परीक्षार्थियों को उनके सेंटर तक पहुंचाया।

परीक्षा के पहले दिन परीक्षा केंद्रों पर पुरुष अभ्यार्थियों से ज्यादा महिलाओं की संख्या ज्यादा नजर आई। चेकिंग के दौरान महिलाओं के हेयर बैंड, नोज पिन और जूते तक उतरवाए गए। इसके अलावा एक-एक परीक्षार्थी की बायोमेट्रिक के जरिए जांच की गई। अंगूठे और चेहरे का मिलान किया गया। उपायुक्त महेन्द्र पाल व अन्य अधिकारियों ने विभिन्न सेंटरों का दौरा करके परीक्षा संचालन का जायजा लिया।

हिसार। परीक्षा केंद्र का मुआयना करते डीसी महेंद्र पाल।

हिसार। छात्रा दीपांशी गोयल को गाड़ी में बैठाकर रवाना करते यातायात प्रबंधक प्रीतम कुमार व अन्य कर्मचारी।

सुरक्षा एवं जांच

- परीक्षा केंद्रों पर पुरुषों की तुलना में महिला अभ्यर्थियों की संख्या अधिक रही।
- प्रवेश से पहले कड़ी जांच की गई।
- महिलाओं के हेयर बैंड, नोज पिन और जूते तक उतरवाकर जांच की गई।
- प्रत्येक परीक्षार्थी का बायोमेट्रिक सत्यापन किया गया।
- अंगूठे के निशान और चेहरे (फेस रिकग्निशन) का मिलान किया गया।

रोडवेज ने इन रूटों पर चलाई बसें

रोडवेज प्रशासन ने परीक्षार्थियों को उनके परीक्षा केन्द्र तक पहुंचाने के लिए विशेष बसों का प्रबंध किया। इसके तहत विभाग ने लोकल बस अड्डे से पांच बूथों से विभिन्न परीक्षा केन्द्रों तक बसें चलाई। रोडवेज की बसें ओम स्टर्लिंग ग्लोबल यूनिवर्सिटी, राजकीय महिला महाविद्यालय, डीएवी पुलिस पब्लिक स्कूल, जीजेयू एचएयू परिसर, दिल्ली पब्लिक स्कूल और दर्शन अकादमी सहित अन्य परीक्षा केंद्रों तक पहुंची। यातायात प्रबंधक प्रीतम कुमार पल-पल की स्थिति पर नजर रखे रहे वहीं विभाग के निरीक्षकों, उप निरीक्षकों व अन्य कर्मचारियों ने भी परीक्षार्थियों को परीक्षा केन्द्रों तक पहुंचाने में मदद की।

रोडवेज की संवेदनशीलता, लेट छात्रा को मिली समय पर मदद

रोडवेज अधिकारियों द्वार लोकल बस अड्डे पर पांच बूथ निर्धारित करके परीक्षार्थियों को पहुंचाने के लिए बसों का प्रबंध किया गया था। इसी दौरान एक छात्रा दीपांशी गोयल ऐन मौके पहुंची और यातायात प्रबंधक प्रीतम कुमार को बताया कि उसका ओम स्टर्लिंग यूनिवर्सिटी में एचटेट का पेपर है और वह लेट हो गई है। यातायात प्रबंधक ने तुरंत वहां पर खड़ी रोडवेज महाप्रबंधक की बोलेरो के चालक सचिन को आदेश दिए कि वह छात्रा दीपांशी गोयल को बोलेरो में ही उसके परीक्षा केन्द्र तक पहुंचाएं क्योंकि बड़ा वाहन होने के कारण बस को देरी हो सकती है। अधिकारी ने चालक को यह भी कहा कि वह छात्रा की परीक्षा केन्द्र में एंट्री करवाकर आए और यदि कोई दिक्कत आए तो उनकी बात करवाए। रोडवेज अधिकारी द्वारा छात्रा को इस तरह अधिकारी की गाड़ी में भिजवाने की वहां उपस्थित सभी लोगों ने प्रशंसा की।

नागरिक अस्पताल में डी-फ्रीजर हैंडओवर न होने पर कंपनी ब्लैकलिस्ट की तैयारी

- महिला के शव को चूहों द्वारा कुतरने की घटना के बाद भी कंपनी ने डी-फ्रीजर हैंडओवर नहीं किया, स्वास्थ्य विभाग ने सात दिन का अल्टीमेटम जारी किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हिसार

नागरिक अस्पताल के शवगृह में डी-फ्रीजर के अंदर रखे महिला के शव को चूहों द्वारा कुतरने के गंभीर मामले में स्वास्थ्य विभाग ने सख्त रुख अपना लिया है। मरम्मत के बाद भी डी-फ्रीजर को अस्पताल प्रबंधन को हैंडओवर न करने पर नागरिक अस्पताल की पीएमओ डॉ. रीना जैन ने मुख्यालय को पत्र लिखकर संबंधित कंपनी को ब्लैकलिस्ट करने की सिफारिश की है। अस्पताल प्रबंधन के अनुसार, डी-फ्रीजर खराब होने के कारण पिछले महीने एक मृत महिला के शव को चूहों ने नुकसान पहुंचाया था। इस लापरवाही के बाद कंपनी को उपकरण ठीक करने के लिए पत्र लिखा गया था। कंपनी के इंजीनियरों ने तीन दिनों तक काम करके डी-फ्रीजर ठीक तो कर दिए, लेकिन आधिकारिक तौर पर अस्पताल को हैंडओवर किए बिना ही चले गए। बार-बार संपर्क करने के बावजूद कंपनी के अधिकारी हैंडओवर की प्रक्रिया पूरी करने नहीं आ रहे हैं।

मरीजों और परिजनों की बढ़ी परेशानी

शवगृह के सामने बने दो कमरों में रखे इन डी-फ्रीजरों में कुल 8 शवों (4-4 चेंबर) को रखने की व्यवस्था है। लेकिन हैंडओवर न होने के कारण इन्हें चालू नहीं किया जा सका है। वर्तमान में शवगृह के अंदर केवल दो डी-फ्रीजर ही काम कर रहे हैं। इसका सीधा असर व्यवस्था पर पड़ रहा है। अस्पताल में दो से अधिक शव आने पर उन्हें मजबूरी में अग्रोहा मेडिकल कॉलेज रेफर करना पड़ता है। इसके बाद अगले दिन पोस्टमार्टम के लिए शवों को दोबारा नागरिक अस्पताल वापस लाया जाता है, जिससे मृतक के परिजनों को भारी मानसिक और आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

मुख्यालय को पत्र भेजा

कंपनी की तरफ से डी-फ्रीजरों को ठीक करने के बाद भी हैंडओवर नहीं किया गया है। हम कई बार कंपनी को पत्र लिख चुके हैं। अब स्वास्थ्य विभाग मुख्यालय को पत्र भेजा गया है कि यदि 7 दिन के अंदर कंपनी के अधिकारी आकर इन्हें हैंडओवर नहीं करते हैं, तो कंपनी को ब्लैकलिस्ट कर दिया जाए। -डॉ. रीना जैन, पीएमओ, नागरिक अस्पताल, हिसार

टोल प्लाजा हत्याकांड में एक आरोपी पकड़ा

हिसार। हाल ही में टोल प्लाजा पर हुए बहुचर्चित हत्याकांड की गहन जांच के दौरान सीआईए टीम ने मामले में संलिप्त एक अन्य आरोपी को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपी की पहचान हिसार के सेक्टर 16 निवासी साहिल के रूप में हुई है। सीआईए प्रभारी पीएसआई कर्ण सिंह ने बताया कि प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि आरोपी साहिल वारदात के समय घटनास्थल पर मौजूद था। जांच के दौरान यह भी पता चला कि जिस स्कॉर्पियो वाहन का वारदात में इस्तेमाल किया गया था, उसे आरोपी साहिल द्वारा किराये (रेंट) पर लिया गया था। मामले से जुड़े सभी तथ्यों की गहनता से जांच की जा रही है। उन्होंने बताया कि गिरफ्तार आरोपी से पूछताछ करते हुए वारदात की योजना, घटना में शामिल अन्य आरोपियों की भूमिका, वारदात में प्रयुक्त वाहन तथा पूरे घटनाक्रम के संबंध में पता लगाया जाएगा। मामले की जांच जारी है और जांच के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी। पुलिस अधीक्षक सिद्धांत जैन ने कहा कि किसी भी संगीन अपराध में शामिल आरोपी को किसी भी सूरत में बख्शा नहीं जाएगा।

बिजली का करंट लगने से भैंस की मौत, किसान ने की मुआवजे की मांग

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौंद

कस्बे में भैंस करंट लगने से एक भैंस की मौत हो गई। बताया जा रहा है कि किसान सुबह भैंस को तालाब पर पानी पिलाने जा रहा था। रास्ते में लगे बिजली के ट्रांसफार्मर के संपर्क में आने से उसे करंट लग गया जिसके कारण भैंस की मौके पर ही मौत हो गई। पीड़ित किसान ने सरकार से मुआवजे की मांग की है।

पीड़ित किसान शमशेर ने बताया कि शनिवार की सुबह वो अपनी भैंस को पानी पिलाने के लिए तालाब पर जा रहा था कि दादा देवराज पार्क के पास लगे बिजली के ट्रांसफार्मर के पास उगी हुई घास को देखकर भैंस वहां चली गई और ट्रांसफार्मर पर लगी लोहे की पाइप से टकरा गई। पाइप में करंट होने के कारण भैंस को करंट लग गया। उसकी मौके पर ही मौत हो गई। सूचना मिलते ही पुलिस भी पहुंच गई। पशुपालन विभाग के डॉक्टर ने भैंस का पोस्टमार्टम किया। इसकी शिकायत पुलिस और उसे अधिकारी को दे दी गई है। पीड़ित किसान शमशेर ने बताया कि करीब 15 दिन पहले ही भैंस के खरीददार उनके घर पर आए थे और तीन लाख में भैंस को खरीद रहे थे लेकिन उन्होंने भैंस को नहीं बेचा।

नारनौंद। बिजली के ट्रांसफार्मर से करंट लगने के बाद पड़ी हुई भैंस।

काफी समय से आ रहा करंट

इस ट्रांसफार्मर में पिछले काफी समय से करंट आ रहा था। इसकी शिकायत काफी बार बिजली निगम कार्यालय में की जा चुकी है परंतु बिजली निगम द्वारा इसको ठीक नहीं किया गया। बारिश के मौसम में करंट आने की वजह से इसके पास से गुजरने वाले पशुओं को हल्का बिजली करंट महसूस होता था।

उमरा गेट पर लगे ट्रांसफॉर्मर में ब्लास्ट

- आग की चपेट में आई रेहड़ी, स्कूटी व टाटा -एस

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हांसी

उमरा गेट क्षेत्र में शनिवार शाम को उस समय अफरा-तफरी मच गई, जब एक बिजली ट्रांसफॉर्मर में अचानक तेज धमाके के साथ ब्लास्ट हो गया। ब्लास्ट के बाद ट्रांसफॉर्मर से निकली आग ने पास में खड़ी एक रेहड़ी और एक स्कूटी तथा टाटा -एस गाड़ी को अपनी चपेट में ले लिया। लेकिन गनीमत रही कि किसी प्रकार की जनहानि नहीं हुई।

घटना के बाद आसपास के लोगों में हड़कंप मच गया। स्थानीय लोगों ने तुरंत आग बुझाने का प्रयास किया और इसकी सूचना बिजली निगम व अग्निशमन विभाग को दी। सूचना मिलने पर दमकल विभाग की एक गाड़ी ने मौके पर पहुंच आग पर काबू पाया। गनीमत रही कि इस हादसे में किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है। हालांकि रेहड़ी, स्कूटी व टाटा -एस गाड़ी को आग से नुकसान पहुंचा है। ट्रांसफॉर्मर ब्लास्ट के कारण क्षेत्र में बिजली आपूर्ति बंद हो गई। खबर लिखे जाने तक बिजली निगम के अधिकारियों ने मौके पर पहुंच स्थिति का जायजा लिया तथा ट्रांसफॉर्मर में ब्लास्ट होने के कारणों का पता लगाया जा रहा है।

हांसी। ट्रांसफार्मर में ब्लास्ट के बाद लगी आग।

एडीसी लक्षित सरीन ने शहर की जल निकासी व्यवस्था का लिया जायजा

बरसाती सीजन से पहले हांसी प्रशासन अलर्ट

- शहर के सभी प्रमुख नालों और सीवरेज लाइनों की समयबद्ध सफाई करने के निर्देश दिए

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हांसी

आगामी बरसाती सीजन को देखते हुए शहर में जलभराव की संभावित समस्या से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए जिला प्रशासन ने तैयारियां तेज कर दी हैं। अतिरिक्त उपायुक्त एवं नगर निगम आयुक्त लक्षित सरीन ने शनिवार को शहर में नेहरू कॉलेज रोड, दिल्ली गेट और आमटी तालाब क्षेत्र का दौरा कर बंद पड़े नालों तथा सीवरेज व्यवस्था का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान एडीसी लक्षित सरीन ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि शहर के सभी प्रमुख नालों और सीवरेज लाइनों की समयबद्ध सफाई सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कहा कि जहां कहीं भी जल निकासी में अवरोध है, उसे प्राथमिकता के आधार पर तुरंत दूर किया जाए, ताकि बरसात के दौरान नागरिकों को जलभराव और गंदे पानी की निकासी जैसी समस्याओं का सामना न करना पड़े। उन्होंने कहा कि सभी संबंधित विभाग आपसी समन्वय के साथ कार्य करते हुए आवश्यक व्यवस्थाएं समय रहते पूरी करें। निरीक्षण के दौरान उन्होंने अधिकारियों से जल निकासी व्यवस्था की मौजूदा स्थिति की जानकारी ली और मौके पर ही आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। एडीसी ने क्षेत्र के नागरिकों से भी बातचीत कर उनकी समस्याएं सुनीं तथा संबंधित अधिकारियों को उनके शीघ्र समाधान के निर्देश दिए। उन्होंने भरोसा दिलाया कि बरसाती मौसम के दौरान शहरवासियों को किसी प्रकार की परेशानी न हो, इसके लिए प्रशासन पूरी तरह सतर्क है।

हांसी। बंद पड़े नालों तथा सीवरेज व्यवस्था का निरीक्षण कर अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश देते एडीसी लक्षित सरीन।

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर जन स्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी विभाग के कार्यकारी अभियंता संजीव त्यागी, जूनियर इंजीनियर योगेश, नगर परिषद सेनेटरी इंस्पेक्टर संजय कुमार सहित संबंधित विभागों के अधिकारी एवं क्षेत्रवासी उपस्थित रहे।

■ 60 हजार बचाने के चक्कर में गंवा सकते हैं 82 लाख रुपये

■ कंपाउंडिंग बताता है कि निवेश में समय ही सबसे बड़ी पूंजी

■ जल्दी शुरुआत करने वालों को मिलता है सबसे बड़ा फायदा

एसआईपी में सिर्फ 1 वर्ष की देरी पड़ सकती है भारी

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

म्यूचुअल फंड में निवेश करने वाले ज्यादातर लोग यह मानते हैं कि जितना अधिक पैसा निवेश करेंगे, उतना बड़ा फंड तैयार होगा। यह बात सही है, लेकिन पूरी सच्चाई नहीं। निवेश विशेषज्ञों का कहना है कि निवेश की रकम से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण है निवेश की शुरुआत का समय। यदि कोई व्यक्ति एसआईपी शुरू करने में सिर्फ एक साल की भी देरी करता है तो उसे भविष्य में लाखों रुपये का नुकसान उठाना पड़ सकता है। वित्तीय विशेषज्ञों के अनुसार कंपाउंडिंग की ताकत समय के साथ सबसे अधिक काम करती है। यही वजह है कि एसआईपी की पहली किस्त की कीमत आखिरी किस्त से कई गुना ज्यादा होती है। एक साल की देरी केवल 12 किस्तों का नुकसान नहीं कराती, बल्कि उन किस्तों पर मिलने वाले वर्षों के रिटर्न से भी निवेशक वंचित रह जाता है।

क्यों सबसे अहम है पहली एसआई

कंपाउंडिंग का अर्थ है कि निवेश पर मिलने वाला रिटर्न भी आगे चलकर रिटर्न कमाने लगता है। यानी आपका पैसा केवल बढ़ता नहीं, बल्कि बढ़ा हुआ पैसा भी कमाई करता है। यदि कोई निवेशक 30 वर्ष तक लगातार एसआईपी करता है, तो पहले साल जमा की गई रकम को पूरे 30 वर्षों तक बढ़ने का मौका मिलता है। वहीं अंतिम वर्ष में जमा की गई राशि को केवल कुछ महीनों का ही समय मिलता है। यही कारण है कि शुरुआती निवेश की ताकत सबसे अधिक होती है। विशेषज्ञ इसे निवेश की दुनिया का सबसे बड़ा जादू मानते हैं। जितनी जल्दी शुरुआत होगी, कंपाउंडिंग उतना ही अधिक काम करेगी।

एक साल की देरी का बड़ा नुकसान

मान लीजिए कोई निवेशक हर महीने 5,000 रुपये की एसआईपी करता है और उसे औसतन 12 प्रतिशत वार्षिक रिटर्न मिलता है। यदि वह लगातार 30 वर्षों तक निवेश करता है तो कुल निवेश राशि 18 लाख रुपये होगी। इस अवधि के अंत में उसका फंड लगभग 1.76 करोड़ रुपये तक पहुंच सकता है। लेकिन यदि वही निवेशक एसआईपी शुरू करने में सिर्फ एक वर्ष की देरी कर देता है और केवल 29 वर्ष निवेश करता है, तो उसका अंतिम फंड घटकर लगभग 1.56 करोड़ रुपये रह जाएगा। यानी केवल 60 हजार रुपये (12 किस्तें) का निवेश टालने की कीमत लगभग 20.43 लाख रुपये हो सकती है। यह उदाहरण बताता है कि निवेश में सबसे बड़ा नुकसान बाजार की गिरावट नहीं, बल्कि समय गंवाने से होता है।

जितनी बड़ी एसआई, उतना नुकसान

एक साल की देरी का असर निवेश राशि बढ़ने के साथ और भी ज्यादा दिखाई देता है। यदि कोई निवेशक हर महीने 2,000 रुपये की एसआईपी करता है तो एक साल की देरी से लगभग 8.17 लाख रुपये का संभावित नुकसान हो सकता है। 10,000 रुपये मासिक एसआईपी करने वाले निवेशक के लिए यही नुकसान बढ़कर लगभग 40.87 लाख रुपये तक पहुंच सकता है। वहीं यदि मासिक एसआईपी 20,000 रुपये की है तो केवल एक साल की देरी भविष्य में करीब 82 लाख रुपये के संभावित फंड को कम कर सकती है। यही कारण है कि निवेश विशेषज्ञ हमेशा कहते हैं कि ₹सही समय का इंतजार मत कीजिए, समय को अपने पक्ष में कीजिए।

आखिर में रफ्तार पकड़ती है कंपाउंडिंग

एसआईपी का सबसे दिलचस्प पहलू यह है कि शुरुआती वर्षों में निवेश की रफ्तार धीमी लगती है, लेकिन बाद के वर्षों में वही निवेश तेजी से बढ़ने लगता है।

उदाहरण के तौर पर 5,000 रुपये की मासिक एसआईपी में

- 10 वर्ष बाद कुल निवेश लगभग 6 लाख रुपये होगा और फंड करीब 11.62 लाख रुपये बन सकता है।
- 20 वर्ष बाद कुल निवेश 12 लाख रुपये होगा, लेकिन फंड करीब 50 लाख रुपये तक पहुंच सकता है।
- 30 वर्ष पूरे होने पर कुल निवेश 18 लाख रुपये रहेगा, जबकि फंड बढ़कर लगभग 1.76 करोड़ रुपये हो जाएगा।
- यानी अंतिम दस वर्षों में केवल 6 लाख रुपये का अतिरिक्त निवेश पूरे फंड को 50 लाख रुपये से बढ़ाकर 1.76 करोड़ रुपये तक पहुंचा देता है। यही कंपाउंडिंग की असली ताकत है।

शुरुआत में देरी हो गई तो क्या करें?

यदि किसी कारणवश एसआईपी शुरू करने में देरी हो गई है तो भी नुकसान की भरपाई की जा सकती है।

विशेषज्ञों के अनुसार यदि आपने पहला साल गंवा दिया है तो शेष अवधि में अपनी मासिक एसआईपी थोड़ी बढ़ाकर इस अंतर को काफी हद तक पूरा किया जा सकता है। उदाहरण के लिए यदि आपकी योजना 5,000 रुपये मासिक एसआईपी की थी और एक साल की देरी हो गई, तो अगले 29 वर्षों तक लगभग 5,655 रुपये प्रति माह निवेश करके उस संभावित अंतर को काफी हद तक भरा जा सकता है। यानी हर महीने केवल 655 रुपये अतिरिक्त निवेश भविष्य में लाखों रुपये का अंतर पैदा कर सकता है।

छोटी एसआईपी भी बनेगी बड़ा फंड

- कई लोग सोचते हैं कि निवेश शुरू करने के लिए बड़ी रकम होना जरूरी है, जबकि वास्तविकता इससे बिल्कुल अलग है।
- वित्तीय सलाहकारों का कहना है कि यदि फिलहाल बड़ी राशि उपलब्ध नहीं है तो 500 रुपये, 1,000 रुपये या 2,000 रुपये से भी एसआईपी शुरू की जा सकती है। जैसे-जैसे आय बढ़े, वैसे-वैसे एसआईपी की राशि भी बढ़ाई जा सकती है।
- नियमित निवेश और लंबी अवधि का अनुशासन ही बड़ा कोष तैयार करने की सबसे प्रभावी रणनीति है।

समय ही सबसे बड़ा निवेश है

विशेषज्ञों का मानना है कि निवेश की दुनिया में सबसे मूल्यवान चीज पैसा नहीं, बल्कि समय है। बाजार में उतार-चढ़ाव आते रहेंगे, लेकिन लंबे समय तक निवेश बनाए रखने वाले निवेशकों को कंपाउंडिंग का सबसे बड़ा लाभ मिलता है। यदि आप भविष्य में आर्थिक रूप से मजबूत बनना चाहते हैं तो निवेश की शुरुआत टालने के बजाय जितनी जल्दी संभव हो, उतनी जल्दी एसआईपी शुरू करें। छोटी-सी शुरुआत भी समय के साथ करोड़ों रुपये का फंड तैयार कर सकती है। इसलिए निवेश का सबसे अच्छा समय आज है, क्योंकि एक साल की देरी भविष्य में लाखों नहीं, बल्कि बड़े निवेशकों के लिए करोड़ों रुपये तक का अंतर पैदा कर सकती है।

पीपीएफ या म्यूचुअल फंड पर लें लोन?

- इमरजेंसी में कौन सा विकल्प है बेहतर
- अचानक पैसों की जरूरत पड़ने पर निवेश तोड़े बिना मिल सकती रकम
- दोनों विकल्पों के फायदे, नुकसान और किसके लिए कौन बेहतर

बिजनेस डेस्क

अचानक मेडिकल इमरजेंसी, बिजनेस में नकदी की जरूरत या किसी अन्य जरूरी खर्च के लिए अक्सर लोग अपने निवेश तोड़ देते हैं। लेकिन वित्तीय विशेषज्ञों का मानना है कि लंबी अवधि के निवेश को समय से पहले भुनाने के बजाय उसके बदले लोन लेना कई बार अधिक फायदेमंद साबित होता है। पब्लिक प्रोविडेंट फंड (पीपीएफ) और म्यूचुअल फंड, दोनों पर लोन लेने की सुविधा उपलब्ध है, लेकिन दोनों की शर्तें, ब्याज दरें और लोन की सीमा अलग-अलग हैं। ऐसे में जरूरत और निवेश के आधार पर सही विकल्प चुनना जरूरी है।

पीपीएफ पर लोनः कम ब्याज, लेकिन सीमित सुविधा

पीपीएफ पर लोन केवल एक निश्चित अवधि के दौरान ही लिया जा सकता है। खाता खुलने वाले वित्तीय वर्ष के तीसरे साल से लेकर छठे वित्तीय वर्ष तक ही यह सुविधा मिलती है। यदि पहले लिया गया लोन पूरी तरह चुका दिया गया हो, तभी अगला लोन लिया जा सकता है। लोन की अधिकतम राशि आवेदन से दो वित्तीय वर्ष पहले के खाते में उपलब्ध बैलेंस के केवल 25 प्रतिशत तक सीमित होती है। चूंकि पीपीएफ सरकार समर्थित बचत योजना है, इसलिए इस पर ब्याज भी कम लगता है। वर्तमान में पीपीएफ पर 7.1 प्रतिशत ब्याज मिलता है और लोन की ब्याज दर इससे केवल 1 प्रतिशत अधिक यानी लगभग 8.1 प्रतिशत है। उदाहरण के तौर पर यदि किसी निवेशक को चार लाख रुपये का लोन चाहिए तो उसके पीपीएफ खाते में लगभग 16 लाख रुपये का बैलेंस होना आवश्यक होगा, क्योंकि केवल 25 प्रतिशत राशि ही लोन के रूप में मिल सकती है।

म्यूचुअल फंड पर लोन : ज्यादा रकम और अधिक लचीलापन

म्यूचुअल फंड के बदले लोन निवेशकों के लिए अधिक लचीला विकल्प माना जाता है। यह सुविधा फिजिकल और डीमैट दोनों रूपों में रखी गई म्यूचुअल फंड यूनिट्स पर उपलब्ध है। इसका लाभ व्यक्तिगत निवेशकों के अलावा एचयूएफ, कंपनियां, एलएलपी, ट्रस्ट और साझेदारी फर्में भी ले सकती हैं। इक्विटी, डेट, हाइब्रिड और लिक्विड फंड सभी पर लोन मिल सकता है, हालांकि लोन की सीमा फंड के प्रकार पर निर्भर करती है। डेट और लिक्विड फंड पर आमतौर पर 70 से 80 प्रतिशत तक लोन मिल जाता है, जबकि इक्विटी फंड पर यह सीमा लगभग 50 प्रतिशत रहती है। यदि किसी निवेशक को चार लाख रुपये की जरूरत है तो करीब आठ लाख रुपये के म्यूचुअल फंड निवेश के आधार पर यह राशि मिल सकती है। सबसे बड़ा फायदा यह है कि निवेशक की यूनिट्स बिकती नहीं हैं और वे बाजार में निवेशित बनी रहती हैं, जिससे लंबी अवधि में संपत्ति निर्माण जारी रहता है।

ब्याज और जोखिम में बड़ा अंतर

म्यूचुअल फंड पर लोन की ब्याज दर आमतौर पर 9 से 12 प्रतिशत के बीच होती है। कई बैंक और वित्तीय संस्थान इसे ओवरड्राफ्ट सुविधा के रूप में देते हैं, जिसमें केवल इस्तेमाल की गई राशि पर ही ब्याज देना पड़ता है। हालांकि इसमें एक जोखिम भी है। यदि बाजार गिरता है और म्यूचुअल फंड की नेट एसेट वैल्यू (एनएवी) कम हो जाती है, तो बैंक अतिरिक्त सिक्योरिटी या आंशिक भुगतान की मांग कर सकता है। ऐसा नहीं करने पर गिरवी रखी गई यूनिट्स बेची भी जा सकती हैं।

किसके लिए कौन सा विकल्प बेहतर

वेतनभोगी कर्मचारियों के लिए, जो नियमित एसआईपी करते हैं और अच्छा म्यूचुअल फंड पोर्टफोलियो बना चुके हैं, म्यूचुअल फंड पर लोन बेहतर विकल्प माना जाता है। इससे निवेश टूटता नहीं और कंपाउंडिंग का लाभ भी जारी रहता है। स्वरोजगार या व्यवसाय करने वालों के लिए भी म्यूचुअल फंड पर लोन अधिक उपयोगी है, क्योंकि इसमें बड़ी राशि अपेक्षाकृत जल्दी मिल सकती है।

एसआईएफ की बढ़ती लोकप्रियता से लंपसम निवेश को मिल रही है चुनौती

10 लाख की न्यूनतम निवेश सीमा के बावजूद एसआईएफ की ओर बढ़ा रुझान

जानकारी
बिजनेस डेस्क

विशेषज्ञों का कहना है कि पहले लॉन्ग-शॉर्ट निवेश रणनीति का लाभ केवल कैटेगरी-III अल्टरनेटिव इन्वेस्टमेंट फंड (एआईएफ) के माध्यम से ही मिल पाता था। लेकिन एआईएफ में निवेश की न्यूनतम सीमा एक करोड़ रुपये होती है, जो अधिकांश निवेशकों की पहुंच से बाहर है। इसके विपरीत एसआईएफ में केवल 10 लाख रुपये से निवेश संभव है। इससे संपन्न निवेशकों को कम पूंजी में वही निवेश रणनीति अपनाने का अवसर मिल रहा है। यही कारण है कि बड़ी संख्या में एचएनआई निवेशक अब एसआईएफ को अपनाने लगे हैं।

म्यूचुअल फंड उद्योग में लंपसम निवेशकों के लिए एक नया विकल्प तेजी से उभर रहा है। स्पेशलाइज्ड इन्वेस्टमेंट फंड (एसआईएफ) की बढ़ती लोकप्रियता अब पारंपरिक इक्विटी म्यूचुअल फंडों के लंपसम निवेश को चुनौती देती दिखाई दे रही है। बाजार विशेषज्ञों का मानना है कि हाल के महीनों में इक्विटी म्यूचुअल फंडों में लंपसम निवेश घटने के पीछे एसआईएफ की बढ़ती स्वीकार्यता भी एक अहम वजह हो सकती है। पिछले महीने इक्विटी म्यूचुअल फंडों में शुद्ध निवेश (नेट इनफ्लो) में करीब 40 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई, जबकि दूसरी ओर एसआईपी (एसआईपी) निवेश लगातार मजबूत बना रहा। इससे यह संकेत मिला कि छोटे निवेशक नियमित निवेश जारी रखे हुए हैं, जबकि बड़े निवेशक अब नए विकल्पों की तलाश कर रहे हैं।

सात माह में सात गुना बढ़ा एयूएम

पिछले वर्ष शुरू किए गए स्पेशलाइज्ड इन्वेस्टमेंट फंड्स ने बेहद कम समय में निवेशकों का भरोसा जीत लिया है। अक्टूबर 2025 में इनका एसेट अंडर मैनेजमेंट (एयूएम) लगभग 2,010 करोड़ रुपये था, जो मई 2026 तक बढ़कर 13,814 करोड़ रुपये के करीब पहुंच गया। यानी महज सात महीनों में इनका आकार लगभग सात गुना बढ़ गया। हालांकि एसआईएफ में निवेश के लिए न्यूनतम 10 लाख रुपये की सीमा तय की गई है, फिर भी हाई नेटवर्थ इंडिविजुअल (एचएनआई) निवेशकों में इसका आकर्षण लगातार बढ़ रहा है।

हाइब्रिड लॉन्ग-शॉर्ट स्कीम पसंद

एसआईएफ के भीतर सबसे अधिक लोकप्रियता हाइब्रिड लॉन्ग-शॉर्ट स्कीम को मिली है। मई 2026 तक इस श्रेणी में करीब 9,709 करोड़ रुपये का निवेश आया, जो कुल एसआईएफ एसेट्स का लगभग 70 प्रतिशत है। इन योजनाओं में प्रति फोलियो औसत निवेश भी सबसे अधिक रहा। हाइब्रिड लॉन्ग-शॉर्ट स्कीम में औसत निवेश करीब 33.86 लाख रुपये प्रति फोलियो दर्ज किया गया। इसके मुकाबले इक्विटी लॉन्ग-शॉर्ट स्कीम में यह आंकड़ा 15.64 लाख रुपये और इक्विटी एक्स-टॉप-100 लॉन्ग-शॉर्ट स्कीम में 12.77 लाख रुपये रहा। विशेषज्ञों का कहना है कि यह आंकड़ा बताता है कि संपन्न निवेशक इस नई श्रेणी पर तेजी से भरोसा जता रहे हैं।

क्यों बढ़ रही है एसआईएफ मांग

बाजार जानकारों के अनुसार एसआईएफ की सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह निवेशकों को बेहतर जोखिम-समायोजित रिटर्न देने की कोशिश करता है। विशेष रूप से हाइब्रिड लॉन्ग-शॉर्ट रणनीति बाजार में गिरावट के दौरान भी नुकसान को सीमित रखने का प्रयास करती है। हालिया बाजार सुधार के दौरान इन योजनाओं ने सकारात्मक रिटर्न देकर निवेशकों का भरोसा और मजबूत किया है। यही वजह है कि कई निवेशक अब पारंपरिक लंपसम इक्विटी निवेश की जगह एसआईएफ को प्राथमिकता दे रहे हैं।

म्यूचुअल फंडों पर पड़ेगा असर?

विशेषज्ञों का मानना है कि अभी यह कहना जल्दबाजी होगी कि एसआईएफ पारंपरिक म्यूचुअल फंडों का स्थान ले लेंगे। फिलहाल इसका प्रभाव मुख्य रूप से बड़े लंपसम निवेशकों तक सीमित है। एसआईपी निवेश में किसी प्रकार की कमजोरी देखने को नहीं मिली है। इससे स्पष्ट है कि खुदरा निवेशक अभी भी नियमित निवेश के लिए पारंपरिक म्यूचुअल फंडों पर भरोसा बनाए हुए हैं। हालांकि यदि एसआईएफ का प्रदर्शन लगातार बेहतर रहता है तो आने वाले वर्षों में बड़े निवेशकों का एक हिस्सा इस श्रेणी की ओर शिफ्ट हो सकता है।

किन निवेशकों के लिए बेहतर है एसआईएफ

विशेषज्ञों के अनुसार एसआईएफ उन निवेशकों के लिए उपयुक्त हो सकता है जिनके पास पहले से बड़ा निवेश पोर्टफोलियो है और जो बाजार की अस्थिरता के बीच बेहतर जोखिम प्रबंधन चाहते हैं। विशेष रूप से ऐसे निवेशक जो एकमुश्त बड़ी राशि निवेश करते हैं और केवल इक्विटी पर निर्भर नहीं रहना चाहते, उनके लिए यह एक बेहतर विकल्प बन सकता है। इसके अलावा फिक्स्ड इनकम निवेशक, जो सीमित जोखिम के साथ अपेक्षाकृत बेहतर रिटर्न चाहते हैं, वे भी भविष्य में इस श्रेणी की ओर आकर्षित हो सकते हैं।

अभी भी कई चुनौतियां बाकी

हालांकि विशेषज्ञ यह भी मानते हैं कि एसआईएफ को व्यापक स्तर पर लोकप्रिय होने में अभी समय लगेगा। निवेशकों में जागरूकता बढ़ाने, वितरकों को प्रशिक्षित करने और लंबी अवधि का प्रदर्शन रिकॉर्ड तैयार होने के बाद ही यह श्रेणी बड़े पैमाने पर स्वीकार की जाएगी। निवेशकों के लिए यह भी जरूरी होगा कि वे केवल शुरुआती प्रदर्शन देखकर निवेश न करें, बल्कि फंड की रणनीति, जोखिम, शुल्क और अपने वित्तीय लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए निर्णय लें।

लंबी अवधि में बदल सकता है निवेश का परिदृश्य

वित्तीय विशेषज्ञों का मानना है कि भारतीय निवेश उद्योग तेजी से विकसित हो रहा है। जैसे-जैसे निवेशकों की समझ बढ़ेगी, वे पारंपरिक इक्विटी और डेट फंडों से आगे बढ़कर नई निवेश रणनीतियों को भी अपनाएंगे। स्पेशलाइज्ड इन्वेस्टमेंट फंड इसी बदलाव का संकेत हैं। यदि इनका प्रदर्शन स्थिर और बेहतर बना रहता है तो आने वाले वर्षों में यह हाई नेटवर्थ निवेशकों के पोर्टफोलियो का महत्वपूर्ण हिस्सा बन सकते हैं। हालांकि खुदरा निवेशकों के लिए एसआईपी आधारित म्यूचुअल फंड अभी भी सबसे सरल, अनुशासित और प्रभावी निवेश विकल्प बने हुए हैं।

20 साल की एसआईपी में सिर्फ पांच फंड ही बने असली 'वेल्थ क्रिएटर'

बिजनेस डेस्क। म्यूचुअल फंड में निवेश करने वाले अधिकांश निवेशकों का सपना होता है कि उन्हें लंबे समय तक लगातार बेहतर रिटर्न मिले। हालांकि, ऐसा करने वाले फंड बहुत कम हैं। करीब 600 सक्रिय इक्विटी म्यूचुअल फंड्स के विश्लेषण में केवल पांच ऐसी योजनाएं सामने आई हैं, जिन्होंने 3, 5, 10, 15 और 20 वर्ष जैसी सभी प्रमुख निवेश अवधियों में 15 प्रतिशत से अधिक सालाना एसआईपी रिटर्न दिया है। यह विश्लेषण वैल्यू रिसर्च के 29 जून 2026 तक के आंकड़ों पर आधारित है। सबसे खास बात यह है कि इस सूची में कोई भी फ्लेक्सी-कैप या लार्जकैप फंड शामिल नहीं है। दो मिडकैप, दो हेल्थकेयर और एक इंफ्रास्ट्रक्चर थीम आधारित फंड ने निवेशकों को लंबी अवधि में शानदार संपत्ति बनाने का अवसर दिया। यह दर्शाता है कि मजबूत सेक्टरों में लंबे समय तक धैर्य के साथ निवेश करने वाले निवेशकों को बेहतरीन रिटर्न मिला।

ये हैं पांच सबसे सफल एसआईपी फंड

- इस सूची में एचएसबीसी मिडकैप फंड (रेगूलर) पहले स्थान पर है। इस फंड ने 3 वर्ष में 20.05%, 5 वर्ष में 21.46%, 10 वर्ष में 18.39%, 15 वर्ष में 18.96% और 20 वर्ष में 17.70% का वार्षिक एसआईपी रिटर्न दिया। निवेशक ने 20 वर्षों तक हर महीने 10,000 की एसआईपी की होती, तो उसका निवेश बढ़कर 1.86 करोड़ हो जाता।
- दूसरे स्थान पर एसीबीआई हेल्थकेयर ऑपर्च्युनिटी फंड (रेगूलर) रहा। इसने 20 वर्षों में 16.80 प्रतिशत वार्षिक एसआईपी रिटर्न दिया और 10,000 मासिक निवेश को लगभग 1.68 करोड़ रुपये में बदल दिया।
- तीसरे स्थान पर आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल मिडकैप फंड रहा। इस फंड ने 20 वर्षों में 16.52 प्रतिशत का रिटर्न दिया और लगभग 1.61 करोड़ का कोष तैयार किया।
- चौथे स्थान पर यूटीआई हेल्थकेयर म्यूचुअल फंड (रेगूलर) रहा, जिसने 20 वर्षों में 15.61 प्रतिशत रिटर्न देते हुए 10,000 की मासिक एसआईपी को लगभग 1.45 करोड़ रुपये तक पहुंचाया।
- पांचवें स्थान पर डीएसपी इंडिया टीआईजीईआर फंड (रेगूलर) रहा। इंफ्रास्ट्रक्चर थीम पर आधारित इस फंड ने 20 वर्षों में 15.40 प्रतिशत रिटर्न दिया और निवेशकों का कोष करीब 1.40 करोड़ रुपये तक पहुंचा दिया।

अमेरिकी ब्याज दरों, ट्रेजरी यील्ड और वैश्विक अनिश्चितता से बढ़ा दबाव

सात माह के निचले स्तर पर सोना-चांदी, ऐसे में क्या करें निवेशक

बिजनेस डेस्क

जुलाई की शुरुआत सर्राफा बाजार के लिए झटके भरी रही। 1 जुलाई को घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दोनों बाजारों में सोने और चांदी की कीमतों में बड़ी गिरावट दर्ज की गई। अमेरिकी ट्रेजरी यील्ड में तेजी, फेडरल रिजर्व की सख्त मौद्रिक नीति के संकेत और वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं ने निवेशकों की धारणा को प्रभावित किया। इसका असर यह हुआ कि सोना और चांदी दोनों सात महीने के निचले स्तर के करीब पहुंच गए। हालांकि विशेषज्ञों का मानना है कि यह गिरावट केवल नकारात्मक संकेत नहीं है, बल्कि लंबी अवधि के निवेशकों के लिए अवसर भी बन सकती है। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर अगस्त डिलीवरी वाला सोना 1,701 रुपये यानी 1.19 प्रतिशत टूटकर करीब 1.40 लाख रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ। वहीं सितंबर डिलीवरी वाली चांदी में और बड़ी गिरावट देखने को मिली। चांदी 5,380 रुपये यानी 2.35 प्रतिशत लुढ़ककर 2.23 लाख रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर आ गई।

अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी कमजोरी का यही रुख दिखाई दिया। कॉमेक्स पर सोना करीब 4,000 डॉलर प्रति औंस के महत्वपूर्ण स्तर के आसपास सात महीने के निचले स्तर पर कारोबार करता रहा, जबकि चांदी लगभग तीन प्रतिशत गिरकर 57.73 डॉलर प्रति औंस पर पहुंच गई।

अमेरिकी फेड की सख्ती बनी सबसे बड़ी वजह

बाजार विशेषज्ञों के अनुसार इस गिरावट की सबसे बड़ी वजह अमेरिकी केंद्रीय बैंक फेडरल रिजर्व का सख्त रुख है। हाल के दिनों में फेड अधिकारियों ने संकेत दिए हैं कि यदि महंगाई पूरी तरह नियंत्रण में नहीं आती है तो इस वर्ष के अंत तक ब्याज दरों में एक और बढ़ोतरी की जा सकती है। ब्याज दरें बढ़ने से निवेशकों का रुझान सोने जैसी बिना ब्याज वाली परिसंपत्तियों से हटकर बॉन्ड और अन्य ब्याज देने वाले निवेश विकल्पों की ओर बढ़ जाता है। यही कारण है कि सोने और चांदी पर बिकवाली का दबाव लगातार बना हुआ है।

ट्रेजरी यील्ड और मजबूत डॉलर का असर

अमेरिकी सरकारी बॉन्ड यानी ट्रेजरी की यील्ड में तेजी ने भी सोने की चमक फीकी कर दी है। जब ट्रेजरी यील्ड बढ़ती है तो निवेशकों को सुरक्षित और बेहतर रिटर्न वाले विकल्प मिलने लगते हैं। इससे सोने की मांग घटती है। इसके साथ ही डॉलर इंडेक्स में मजबूती आने से भी अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोने और चांदी की कीमतों पर दबाव बढ़ा। चूंकि सोने का कारोबार डॉलर में होता है, इसलिए डॉलर मजबूत होने पर अन्य देशों के निवेशकों के लिए सोना महंगा हो जाता है और मांग कमजोर पड़ जाती है।

मध्य-पूर्व में बढ़ता तनाव भी चिंता का कारण

मध्य-पूर्व में एक बार फिर बढ़ते तनाव ने बाजार की चिंता बढ़ा दी है। ईरान और अमेरिका के बीच रिश्तों में आई तल्खी तथा शांति वार्ता को लेकर अनिश्चितता ने निवेशकों को सतर्क बना दिया है। हालांकि सामान्य परिस्थितियों में ऐसे तनाव के दौरान सोने को सुरक्षित निवेश माना जाता है, लेकिन इस समय ब्याज दरों और डॉलर की मजबूती का प्रभाव अधिक देखने को मिल रहा है। इसके अलावा कच्चे तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव ने भी वैश्विक महंगाई को लेकर नई चिंताएं पैदा कर दी हैं। यदि तेल महंगा होता है तो महंगाई बढ़ सकती है, जिससे केंद्रीय बैंक ब्याज दरें लंबे समय तक ऊंची रख सकते हैं।

विशेषज्ञ बोले- जल्दबाजी नहीं, रणनीति के साथ ही करें निवेश

अब अमेरिकी आंकड़ों पर टिकी नजर

बाजार की अगली दिशा काफी हद तक अमेरिका से आने वाले आर्थिक आंकड़ों पर निर्भर करेगी। निवेशकों की नजर जून के **ADP** रोजगार आंकड़ों और नॉन-फार्म पेरोल डेटा पर है। यदि रोजगार के आंकड़े मजबूत आते हैं तो फेड के लिए ब्याज दरें ऊंची बनाए रखने का आधार मजबूत होगा, जिससे सोने पर दबाव बना रह सकता है। वहीं, यदि आंकड़े उम्मीद से कमजोर आते हैं तो ब्याज दरों में नरमी की उम्मीद बढ़ेगी और सोना-चांदी में रिकवरी देखने को मिल सकती है।

विशेषज्ञों की रायः अभी सतर्कता जरूरी

सर्राफा बाजार के जानकारों का कहना है कि फिलहाल तकनीकी रूप से सोना और चांदी दोनों कमजोर स्थिति में हैं। विशेषज्ञों के अनुसार यदि अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोना 4,000 डॉलर प्रति औंस के स्तर से नीचे बना रहता है तो अगला मजबूत सपोर्ट 3,600 डॉलर प्रति औंस के आसपास दिखाई देता है। इसी तरह चांदी यदि 60 डॉलर प्रति औंस के नीचे टिकती है तो इसमें 50 डॉलर प्रति औंस तक गिरावट की संभावना बनी रह सकती है। हालांकि लगातार बिकवाली के कारण दोनों धातुएं अब ओवरसोल्ड जोन में पहुंच चुकी हैं। ऐसे में किसी भी सकारात्मक वैश्विक संकेत या कमजोर अमेरिकी आर्थिक आंकड़ों के बाद तेज तकनीकी रिकवरी भी संभव है।

क्या यह खरीदारी का सही समय है?

विशेषज्ञों का मानना है कि लंबी अवधि के निवेशकों को घबराने की जरूरत नहीं है। यदि किसी का निवेश लक्ष्य पांच से दस वर्ष या उससे अधिक का है तो ऐसी गिरावट चरणबद्ध निवेश (स्टैगर्ड इन्वेस्टमेंट) का अवसर बन सकती है। एकमुश्त निवेश करने के बजाय किस्तों में खरीदारी करना अधिक सुरक्षित रणनीति मानी जा रही है। इससे यदि कीमतें और गिरती हैं तो औसत खरीद मूल्य कम किया जा सकता है। वहीं अल्पकालिक ट्रेडर्स को फेडरल रिजर्व के अगले संकेत, अमेरिकी बॉन्ड यील्ड, डॉलर इंडेक्स और वैश्विक घटनाक्रमों पर लगातार नजर बनाए रखनी चाहिए।

दीर्घकाल में बनी रहेगी सोने की अहमियत

सोना सदियों से महंगाई, आर्थिक संकट और वैश्विक अनिश्चितताओं के दौरान सबसे भरोसेमंद निवेश विकल्प माना जाता रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि अल्पकाल में कीमतों में उतार-चढ़ाव स्वाभाविक है, लेकिन लंबी अवधि में सोना निवेश पोर्टफोलियो को स्थिरता देने का महत्वपूर्ण माध्यम बना रहेगा। यही कारण है कि वित्तीय सलाहकार कुल निवेश का एक हिस्सा सोना और चांदी जैसी कीमती धातुओं में रखने की सलाह देते हैं। मौजूदा गिरावट को केवल कमजोरी के रूप में नहीं, बल्कि रणनीतिक निवेश के अवसर के रूप में भी देखा जा सकता है। हालांकि किसी भी निवेश निर्णय से पहले अपनी जोखिम क्षमता, निवेश अवधि और वित्तीय सलाहकार की राय को जरूर ध्यान में रखना चाहिए।

खबर संक्षेप

स्विमिंग पूल पार्टी का हुआ आयोजन

उकलाना। आरडीएम सरस्वती पब्लिक स्कूल में नर्सरी से कक्षा पांचवीं तक के विद्यार्थियों के लिए रंगारंग स्विमिंग पूल पार्टी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय के प्रबंधक डॉ. केसी शर्मा ने रिबन काटकर स्विमिंग पूल का उद्घाटन करते हुए किया। उन्होंने विद्यार्थियों को शुभकामनाएं देते हुए कार्यक्रम की शुरुआत की। इस दौरान विद्यालय परिसर उत्साह और उमंग से सराबोर रहा। नन्हे-मुन्ने विद्यार्थियों ने स्विमिंग पूल में जल क्रीड़ाओं का जमकर आनंद लिया। बच्चों ने मनमोहक नृत्य प्रस्तुत किए और रंग-बिरंगे गुब्बारों व गुलाब की पंखुड़ियों से सजे पूल ने कार्यक्रम की रौनक बढ़ा दी।

ठगी के शिकार को पुलिस ने लौटाए 20 हजार

हिसार। अग्रोहा थाना के साइबर डेस्क ने त्वरित कार्रवाई करते हुए साइबर ठगी के शिकार व्यक्ति के 20 हजार रुपये सफलतापूर्वक वापस दिलवाए। पुलिस के अनुसार इस संबंध में विनोद कुमार ने साइबर ठगी का शिकार होने के संबंध में शिकायत दर्ज कराई थी। शिकायत के आधार पर कार्रवाई करते हुए अग्रोहा थाना के पीएसआई संजय कुमार, साइबर डेस्क ने संबंधित बैंक एवं साइबर पोर्टल के माध्यम से त्वरित समन्वय स्थापित किया। लगातार प्रयासों के परिणामस्वरूप ठगी गई राशि में से 20 हजार रुपये शिकायतकर्ता के खाते में वापस करवा दिए गए।

प्रेम नगर में लंबे समय से जमा है गंदा पानी, घरों तक पहुंच रही बदबू, जीना हुआ दूभर

टूटा सब्र तो लोगों ने रस्सा बांध रेलवे फ्लाईओवर कर दिया बंद

हरिभूमि न्यूज ⏭ हांसी

उमरा रोड स्थित प्रेम नगर गांव में रेलवे फ्लाईओवर के दोनों ओर लंबे समय से जमा सीवरेज के गंदे पानी से परेशान ग्रामीणों का शनिवार को सब्र जवाब दे गया। सीवरेज के पानी से उठने वाली गंध व घरों में आने जाने का रास्ता बंद होने पर बड़ी संख्या में महिलाओं और पुरुषों ने उमरा रोड स्थित फ्लाईओवर पर रस्सा बांध जाम कर दिया और सरकार तथा प्रशासन के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। करीब 11 बजे शुरू हुए प्रदर्शन के कारण सड़क के दोनों ओर वाहनों की लंबी कतारें लग गईं और लोगों को उमस भरी गर्मी में भारी परेशानी का सामना करना पड़ा। थाना प्रभारी की एक नहीं सुनी सड़क जाम किए जाने की सूचना मिलते ही शहर थाना प्रभारी इंस्पेक्टर सुखजीत सिंह पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे और जाम लगा रहे लोगों को समझाने का प्रयास किया लेकिन ग्रामीणों ने उनकी एक नहीं सुनी और जनस्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को मौके पर बुलाकर फ्लाईओवर के दोनों ओर भरे सीवरेज के पानी का समाधान करवाने की मांग की। प्रदर्शन में शामिल महिलाओं ने कहा कि सीवरेज के गंदे पानी से उठने वाली बदबू से उनका घरों में रहना भी दूभर हो गया। ई-रिक्शा यूनियन के प्रधान सुनील मजोका ने बताया कि फ्लाईओवर के दोनों ओर लंबे समय से गंदा पानी भरा हुआ है। इस समस्या को लेकर समाधान शिविर, एसडीएम और जनस्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को कई बार शिकायत दी गई, लेकिन हर बार केवल आश्वासन ही मिला। शहर थाना प्रभारी इंस्पेक्टर सुखजीत सिंह द्वारा सूचित किए जाने के बाद जनस्वास्थ्य विभाग के एक्सईएन संजीव त्यागी विभाग के अधिकारियों के साथ मौके पर पहुंचे। प्रदर्शनकारियों से बातचीत कर उन्हें शांत कराया।

हांसी। रेलवे स्टेशन फ्लाईओवर पर जाम लगाते ग्रामीण

हादसों में कई हो चुके चोटिल

ग्रामीणों का कहना है कि रेलवे स्टेशन जाने वाले सैकड़ों यात्रियों, ई-रिक्शा चालकों और प्रेम नगर के निवासियों को रोज इसी मार्ग से गुजरना पड़ता है। सड़क पर भरे गंदे पानी के कारण गड्ढे दिखाई नहीं देते, जिससे कई बार दोपहिया वाहन और ई-रिक्शा यहां पलट चुके हैं और इन हादसों में दर्जनों लोग घायल चुके हैं।

प्रदर्शन के दौरान सरपंच और किसान नेता में तीखी बहस

हांसी। प्रेम नगर में रेलवे फ्लाईओवर के पास सीवरेज के गंदे पानी की निकासी की मांग को लेकर चल रहे ग्रामीणों के प्रदर्शन के दौरान शनिवार को प्रेम नगर के सरपंच अरविंद कटारिया और भारतीय किसान यूनियन के संस्थापक रणबीर मलिक के बीच तीखी नोकझोंक हो गई। घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। वहीं किसान यूनियन ने पूरे मामले की शिकायत पुलिस अधीक्षक विनोद कुमार को देकर कार्रवाई की मांग की है।

जानकारी के अनुसार, प्रेम नगर के ग्रामीण लंबे समय से रेलवे फ्लाईओवर के दोनों ओर जमा सीवरेज के गंदे पानी की समस्या से परेशान हैं। इसी को लेकर ग्रामीणों ने जाम लगाकर प्रदर्शन किया हुआ था। प्रदर्शन के दौरान किसान नेता रणबीर मलिक अपने समर्थकों के साथ मौके पर पहुंचे, जिस पर सरपंच अरविंद कटारिया ने आपत्ति जताई। सरपंच का कहना था कि यह प्रेम नगर के ग्रामीणों का स्थानीय मुद्दा है और इसे राजनीतिक मंच नहीं बनाया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि ग्रामीण अपनी समस्या का समाधान स्वयं कर लेंगे और बाहरी लोगों को इसमें हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। इसी दौरान दोनों पक्षों के बीच तीखी बहस शुरू हो गई। स्थिति को बिगड़ता देख मौके पर मौजूद शहर थाना प्रभारी इंस्पेक्टर सुखजीत सिंह ने हस्तक्षेप कर दोनों पक्षों को शांत कराया। इसके बाद मामला शांत हो गया, लेकिन बहस का वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो गया। वहीं किसान नेता दशरथ मलिक ने बताया कि रणबीर मलिक के साथ अभद्र व्यवहार किए जाने और जान से मारने की धमकी देने के आरोप में पुलिस अधीक्षक हांसी को लिखित शिकायत दी गई है।

बिना अग्नि के बनाए लाजवाब व्यंजन

उकलाना। आरडीएम सरस्वती पब्लिक स्कूल में साप्ताहिक गतिविधियों की श्रृंखला के अंतर्गत शनिवार को फूड फिएस्टा (नो-फायर कुकिंग एक्टिविटी)' का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में कक्षा छठी से बारहवीं तक के विद्यार्थियों ने पूरे उत्साह के साथ भाग लेते हुए बिना आग का प्रयोग किए स्वादिष्ट, पौष्टिक और आकर्षक व्यंजन तैयार किए। विद्यार्थियों ने अपनी रचनात्मकता, स्वच्छता और पाक-कौशल का प्रभावशाली प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता कक्षा-स्तर पर आयोजित की गई। विद्यार्थियों ने ब्रेड से सैंडविच, बर्गर, विभिन्न प्रकार के स्नैक्स, भेल, चने-नमकीन से बने व्यंजन, बिस्किट, दूध एवं पनीर से तैयार कई स्वादिष्ट और स्वास्थ्यवर्धक खाद्य पदार्थ प्रस्तुत किए। संस्था के अध्यक्ष डॉ. के.सी. शर्मा व विद्यालय की प्रधानाचार्या शालू एस. कटारिया ने विजेता विद्यार्थियों को बधाई दी।

हिसार में छह स्पर्धाओं में दमखम दिखाएंगे खिलाड़ी

हिसार। योगासन स्पोर्ट्स एसोसिएशन की कार्यकारिणी समिति की ऑनलाइन बैठक डीएन कॉलेज के प्राचार्य एवं संगठन के उपाध्यक्ष डॉ. विक्रमजीत की अध्यक्षता में हुई। बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि छठी जिला योगासन खेल प्रतियोगिता का आयोजन 8 एवं 9 अगस्त को दयानंद कॉलेज में किया जाएगा। प्रतियोगिता में भाग लेने के इच्छुक खिलाड़ियों के लिए 6 अगस्त पंजीकरण की अंतिम तिथि निर्धारित की गई है। बैठक में योगासन स्पोर्ट्स एसोसिएशन के अध्यक्ष अजय इलाहाबादी ने सभी पदाधिकारियों का स्वागत करते हुए कहा कि जिला प्रतियोगिता अब केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ियों को तैयार करने का सशक्त मंच बन चुकी है। इंडियन योग एसोसिएशन हरियाणा चैप्टर के चेयरमैन एवं हरियाणा योगासन स्पोर्ट्स एसोसिएशन के उपाध्यक्ष ईश आर्य ने कहा कि हरियाणा सरकार द्वारा योगासन स्पोर्ट्स को खेल विभाग के अंतर्गत शामिल करने का निर्णय योगासन खेल के इतिहास में मील का पत्थर है। एसोसिएशन के सचिव अनुज कौशिक ने कहा कि प्रतियोगिता ओपन चैंपियनशिप होगी, ताकि कोई भी योग्य खिलाड़ी अवसर से वंचित न रहे। इसमें 10 से 55 वर्ष तक के खिलाड़ी छह आयु वर्गों सब-जूनियर, जूनियर, सीनियर, सीनियर-ए, सीनियर-बी एवं सीनियर-सी में भाग ले सकेंगे। योगासन स्पोर्ट्स एसोसिएशन के मीडिया डायरेक्टर सुरेन्द्र पानू ने बताया कि इस वर्ष प्रतियोगिता में ट्रेडिशनल, आर्टिस्टिक सिंगल, आर्टिस्टिक पेयर, रिदमिक पेयर, आर्टिस्टिक ग्रुप तथा ट्रेडिशनल ग्रुप सहित कुल छह स्पर्धाएं आयोजित की जाएंगी। प्रत्येक प्रतिभागी अधिकतम दो स्पर्धाओं में भाग ले सकेगा।

एन्यूमरेशन फॉर्म भरकर जल्द से जल्द बीएलओ को सौंप दें : एडीसी

अतिरिक्त उपायुक्त ने राजनीतिक दलों के बूथ लेवल एजेंटों संग की बैठक

हरिभूमि न्यूज ⏭ हिसार

अतिरिक्त उपायुक्त शालिनी चेतल ने कहा कि भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार जिले में चलाए जा रहे विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) अभियान के तहत सभी पात्र मतदाता अपने-अपने एन्यूमरेशन फॉर्म को शीघ्र भरकर संबंधित बूथ लेवल अधिकारी (बीएलओ) को उपलब्ध करवाएं, ताकि मतदाता सूची के अद्यतन का कार्य समयबद्ध ढंग से पूरा किया जा सके। उन्होंने कहा कि एन्यूमरेशन फॉर्म का समय पर संग्रहण एवं डिजिटाइजेशन अभियान की सफलता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसलिए सभी नागरिक बिना किसी देरी के फॉर्म भरकर बीएलओ को सौंपें। उन्होंने कहा कि मतदाता फॉर्म भरते समय पुरानी मतदाता सूची में दर्ज अपने विवरण के अनुसार ही जानकारी अंकित करें, जिससे रिकॉर्ड के सत्यापन एवं डिजिटाइजेशन में किसी प्रकार की कठिनाई न आए। अतिरिक्त उपायुक्त ने स्पष्ट किया कि एन्यूमरेशन फॉर्म के साथ पैन कार्ड अथवा अन्य ऐसे कोई दस्तावेज नहीं मांगे जा रहे हैं।

फॉर्म पर केवल आधार कार्ड नम्बर भरा जा सकता है और वह भी वैकल्पिक है। अतिरिक्त उपायुक्त शालिनी चेतल ने शनिवार को सभी अतिरिक्त निर्वाचन पंजीकरण अधिकारियों (एडिशनल एआरओ) तथा विभिन्न राजनीतिक दलों के बूथ लेवल एजेंटों (बीएलए) के साथ बैठक कर अभियान की प्रगति की समीक्षा की। बैठक में उन क्षेत्रों एवं गांवों पर विशेष फोकस करने के निर्देश दिए गए, जहां एन्यूमरेशन फॉर्म का संग्रहण एवं डिजिटाइजेशन अपेक्षाकृत कम है।

हिसार। राजनीतिक दलों के बूथ लेवल एजेंट के साथ बैठक करती अतिरिक्त उपायुक्त शालिनी चेतल। *फोटो : हरिभूमि*

भाजपा की जिला प्रभारी सुनीता डांगी ने ली बैठक

कार्यकर्ता घर-घर जाकर करें पार्टी का प्रचार : सुनीता डांगी

नारनौंद। सभी कार्यकर्ता पूरी मेहनत के साथ संगठन को मजबूत करें और पार्टी की नीतियों का घर-घर प्रचार करें ताकि पार्टी को और ज्यादा मजबूती दी जा सके। यह बात भाजपा की जिला प्रभारी एवं महिला विकास निगम की चेयरमैन सुनीता डांगी ने नारनौंद हलके के चारों मंडलों की मासिक बैठक के दौरान कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कही। इस दौरान जिला प्रधान अशोक सैनी, जिला महामंत्री बिजेंद्र लोहान, मार्केट कमेटी चेयरमैन शमशेर मोर, चेयरमैन उदय सिंह लोहान, नपा चेयरमैन शमशेर कूकन विशेष तौर पर मौजूद थे। उन्होंने बताया कि संगठन को मजबूत करने के लिए पार्टी लगातार कार्यकर्ताओं के बीच में जाकर पार्टी संगठन को बूथ स्तर पर मजबूत करने का काम किया जा रहा है। सभी कार्यकर्ता पूरी मजबूती के साथ घर घर जाकर लोगों को पार्टी की नीतियों के बारे में बताएं की सरकार ने लोगों के हितों के लिए अनेक ऐसी योजनाएं चला रखी है जिससे कि लोगों को सरकार का फायदा मिल सके क्योंकि काफी लोग जानकारी के अभाव में भाजपा सरकार द्वारा लोगों के कल्याण के लिए चलाई गई कल्याणकारी योजनाओं का लाभ नहीं उठा पाते। सभी कार्यकर्ताओं को जागरूक किया जा रहा है कि वह हर शक्ति केंद्र, बीएलओ टू ओर बूथ स्तर पर पहुंचकर कार्यकर्ताओं को जागरूक करने का काम करें जब पार्टी का संगठन मजबूत होगा तो पार्टी मजबूती के साथ खड़ी होगी।

अनुपस्थित, स्थानांतरित एवं मृत वोटरों के सत्यापन में सभी का सहयोग जरूरी

हरिभूमि न्यूज ⏭ आदमपुर

विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) अभियान के तहत अनुपस्थित, स्थानांतरित एवं मृत मतदाताओं के सत्यापन को लेकर शनिवार को राजकीय बहुतकनीकी संस्थान में बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता निर्वाचक पंजीकरण अधिकारी एवं जिला विकास एवं पंचायत अधिकारी नरेंद्र सिंह ने की। बैठक में एईआरओ-1 एवं तहसीलदार आदमपुर रामनिवास भादू, एईआरओ-2 नवीन कुमार, बीडीपीओ आदमपुर, सभी सहायक एईआरओ, आदमपुर विधानसभा क्षेत्र के सभी सुपरवाइजर, सरपंच, ग्राम सचिव, नंबरदार तथा विभिन्न मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के बीएलए-1 एवं बीएलए-2 उपस्थित रहे। निर्वाचक पंजीकरण अधिकारी नरेंद्र सिंह ने कहा कि विशेष गहन पुनरीक्षण अभियान के अंतर्गत अनुपस्थित, स्थानांतरित एवं मृत मतदाताओं का सत्यापन पूरी पारदर्शिता, निष्पक्षता तथा भारत निर्वाचन आयोग के निर्धारित दिशानिर्देशों के अनुरूप किया जाए। उन्होंने कहा कि मतदाता सूची को शुद्ध एवं अद्यतन बनाए रखने के लिए सभी संबंधित अधिकारियों, कर्मचारियों तथा राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों का समन्वित प्रयास आवश्यक है। उन्होंने सभी अधिकारियों, सुपरवाइजरों एवं राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों से सत्यापन कार्य में सक्रिय सहयोग देने तथा निर्धारित समय सीमा के भीतर शत-प्रतिशत गुणवत्ता के साथ कार्य पूर्ण करने का आह्वान किया। बैठक में मतदाता सूची के शुद्धिकरण एवं अद्यतन प्रक्रिया को सफलतापूर्वक संपन्न कराने के लिए आपसी समन्वय बनाए रखने पर विशेष बल दिया गया।

आदमपुर। राजकीय बहुतकनीकी संस्थान में आयोजित बैठक में उपस्थित अधिकारी।

भाविप केशव शाखा ने लगाया निःशुल्क नेत्र जांच शिविर

हिसार। भाविप केशव शाखा द्वारा सेवक सभा अस्पताल के सहयोग से समाज के जरूरतमंद व्यक्तियों के लिए शनिवार को निःशुल्क सफेद मोतियाबिंद ऑपरेशन कैंप का आयोजन किया गया। यह स्वर्गीय शबनम गुप्ता की पुण्य स्मृति में उनके पति रजनीश गुप्ता पुत्र वैभव गुप्ता एवम् पुत्री उर्वशी गुप्ता के सहयोग से लगाया गया। कैंप की विधिवत शुरुआत परिवार से उपस्थित मदनलाल अग्रवाल, पूजा अग्रवाल, कनिका अग्रवाल एवम् नेत्र रोग विशेषज्ञ नम्रता अग्रवाल द्वारा किया गया। कैंप में 12 रोगियों को निःशुल्क ऑपरेशन के लिए चिन्हित किया गया। इस मौके पर केशव शाखा परिवार से वित सचिव वीरेंद्र लाहोरिया, विराट अग्रवाल, शक्ति अग्रवाल, मुकुल मित्तल, सुधीर सिंगला राकेश शर्मा, संजय बंसल, शिव कुमार गर्ग आदि उपस्थित रहे।

ग्वार फसल के लिए लगा प्रशिक्षण शिविर

हिसार। जिले के खंड आदमपुर के गांव मोड़ाखेड़ा में सेवानिवृत उपमंडल कृषि अधिकारी डॉ. बृजलाल बैनीवाल के तत्वावधान में ग्वार विशेषज्ञ डॉ. बीडी यादव के सहयोग से ग्वार फसल पर प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उद्देश्य खरीफ फसल के सीजन को ध्यान में रखते हुए क्षेत्र में ग्वार की अधिक बिजाई करने व ग्वार की उत्पादकता बढ़ाने पर जोर देना था। इस अवसर पर किसानों को ग्वार की पिछेती बिजाई करने में बीजोपचार जरूरी बताया गया। इसके अलावा संतुलित खाद का प्रयोग व अनावश्यक खरपतवारनाशक दवाईयों का प्रयोग न करने को लेकर जानकारी दी गई।

लक्ष्मी वेंकटेश भगवान का हुआ महाभिषेक

हिसार। तिरुपति बालाजी धाम में लक्ष्मी वेंकटेश भगवान का अभिषेक पूरे विधि-विधान से किया गया। अर्चकों ने नियमानुसार पूजा व अर्चना करके जनकल्याण की कामना की। इस अवसर पर विभिन्न क्षेत्रों से आए काफी संख्या में श्रद्धालुओं ने लक्ष्मी वेंकटेश भगवान के दर्शन किए। विभिन्न क्षेत्रों से पहुंचे श्रद्धालुओं ने वेंकटेश भगवान, लक्ष्मी स्वरूपा पद्मावती माता व गोदांबा माता की स्तुति करके मन्नत मांगी। इस दौरान पूरा तिरुपति धाम जय गोविंदा, जय तिरुपति बालाजी, जय माता पद्मावती व जय माता गोदांबा के उदघोष से गुंजायमान हो उठा। इस अवसर पर भगवान की सवारी शोभा यात्रा भी निकाली गई। इस शोभा यात्रा में काफी संख्या में श्रद्धालुओं ने हिस्सा लेकर और रथ को रस्सों से खींचकर अपने इष्ट के प्रति आस्था जताई। तिरुपति धाम में पहुंचे श्रद्धालुओं ने वेंकटेश भगवान, पद्मावती माता, गोदांबा माता, गरुड़, लक्ष्मी नृसिंह, सुदर्शन, रामानुज स्वामी, शठकोप स्वामी, वरवर मुनि एवं हनुमान के मंदिरों के भी दर्शन किए।

नव नियुक्त चेयरमैन रवि सैनी का पड़ाव चौक पर हुआ स्वागत

हिसार। हरियाणा वन विकास निगम के नव नियुक्त चेयरमैन रवि सैनी का पड़ाव चौक स्थित काका बर्तन स्टोर पर स्वागत किया गया। अग्रवाल ग्रुप के प्रधान पवन गोयल काका ने चेयरमैन रवि सैनी का स्वागत करते हुए कहा कि चेयरमैन बनने के बाद पहली बार उनके प्रतिष्ठान पर पहुंचे थे। उपस्थित लोगों ने रवि सैनी का अभिनंदन किया। चेयरमैन रवि सैनी ने उपस्थित लोगों का आभार प्रकट करते हुए कहा कि हर व्यक्ति मानसून के दौरान एक-एक पौधा अवश्य लगाए ताकि हम स्वच्छ वातावरण में रहकर स्वस्थ रह सके। इस अवसर पूर्व सीनियर डिप्टी मेयर डीएन सैनी, अनिल सैनी मानी, शिवकुमार सैनी, प्रेम मलिक, संजय यादव एडवोकेट, कृष्ण गोयल, बैंक अधिकारी मुकेश सैनी, रामेश्वर दूध वाले, पवन मित्तल आदि उपस्थित रहे।

खुशखबरी

अब 1 लाख 80 हजार रुपये वार्षिक आय वालों को भी मिलेगा लाभ: रणबीर गंगवा

सितंबर से बढ़ेगा लाडो लक्ष्मी योजना का दायरा

संत कबीर दास के नाम पर चौक के निर्माण की घोषणा

हरिभूमि न्यूज ⏭ बरवाला

प्रदेश के कैबिनेट मंत्री रणबीर गंगवा ने कहा है कि बरवाला में संत शिरोमणि कबीर दास जी महाराज के नाम पर एक चौक का निर्माण किया जाएगा। वे शनिवार को बरवाला में संत शिरोमणि कबीर दास महाराज की जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

कैबिनेट मंत्री ने कहा कि हरियाणा सरकार अंतोदय के भाव से कार्य कर रही है और अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति के जीवन में सुधार लाने के लिए निरंतर प्रयासरत है। उन्होंने बताया कि ऐसे लोगों के जीवन में बदलाव लाने के लिए लाडो लक्ष्मी जैसी महत्वाकांक्षी योजना चलाई गई है। कैबिनेट मंत्री ने कहा कि अब इस योजना का दायरा बढ़ाया जाएगा और 1 लाख 80 हजार रुपए वार्षिक आय वाले परिवारों को भी सितंबर माह के उपरांत इस योजना में शामिल किया जाएगा। उन्होंने कहा कि संत कबीर दास जी केवल एक संत ही नहीं, बल्कि समाज सुधारक, महान चिंतक और मानवता के सच्चे उपासक थे। उन्होंने अपने दोहों और वाणी के माध्यम से समाज में फैली ऊंच-नीच, छुआछूत, अंधविश्वास और भेदभाव का विरोध किया तथा प्रेम, समानता, भाईचारे और सत्य का संदेश दिया। उनकी शिक्षाएं आज के दौर में और भी अधिक प्रासंगिक हो गई है। युवाओं को शिक्षित बनाने का आह्वान करते हुए कैबिनेट मंत्री ने कहा कि आज हम ऐसे दौर में हैं, जहां किसी भी देश और समाज की सबसे बड़ी ताकत उसके शिक्षित और सक्षम नागरिक होते हैं। वही समाज आगे बढ़ेगा जो अपने बच्चों को शिक्षित और योग्य बनाएगा। शिक्षा केवल नौकरी पाने का माध्यम नहीं, बल्कि एक बेहतर इंसान और सशक्त समाज के निर्माण का आधार है। इस अवसर पर कैबिनेट मंत्री ने धानक समाज की ओर से रखी गई सभी मांगों को पूरा करने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि समाज की धर्मशाला का निर्माण चल रहा है।

बरवाला। संत शिरोमणि कबीर दास जी महाराज की जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित कैबिनेट मंत्री रणबीर गंगवा। *फोटो : हरिभूमि*

मनुष्य की पहचान उसके कर्म से होती है

इस अवसर पर अपने संबोधन में पूर्व मंत्री अनूप धानक ने कहा कि संत कबीर दास जी का जीवन हमें सिखाता है कि मनुष्य की पहचान उसकी जाति, धर्म या वेशभूषा से नहीं, बल्कि उसके कर्म, विचार और आचरण से होती है। प्रदेश सरकार का लक्ष्य है कि समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति तक विकास का लाभ पहुंचे और कोई भी परिवार सरकारी योजनाओं से वंचित न रहे। इस अवसर पर नगर परिषद अध्यक्ष रमेश चंद्र बैटरी वाला, मार्केट कमेटी चेयरमैन प्रवीण सैनी, नप वाइस चेयरमैन ताराचंद नलवा, भाजपा कोषाध्यक्ष अशोक मित्तल, एमिनेंट पर्सन अजयकांत जांगड़ा, राधेश्याम खटक, प्रो. जय नारायण, रामकेश बंसल, पार्षद मनोहर लाल, मोनू संदूजा सहित बड़ी संख्या में क्षेत्र के नागरिक उपस्थित थे।

मोटरसाइकिल चोरी के आरोपी को लिया प्रोडक्शन वारंट पर

हांसी। भाटला पुलिस चौकी ने मोटरसाइकिल चोरी के एक मामले का खुलासा करते हुए आरोपी को न्यायालय के आदेश पर प्रोडक्शन वारंट के जरिए जिला जेल से एक आरोपी को गिरफ्तार कर चोरी की गई मोटरसाइकिल बरामद की है। पुलिस रिमांड के दौरान आरोपी की निशानदेही पर मोटरसाइकिल बरामद करने के बाद उसे दोबारा न्यायालय में पेश किया गया, जहां से उसे न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। मुख्य सिपाही जयवीर सिंह ने बताया कि थाना सदर हांसी में 18 मई को गांव कुलाना निवासी मोहिद की शिकायत पर मोटरसाइकिल चोरी का मामला दर्ज किया गया था। शिकायतकर्ता ने बताया था कि वह 16 मई को अपनी मोटरसाइकिल लेकर कुलाना गांव गया था। वहां किसी अज्ञात व्यक्ति ने उसकी मोटरसाइकिल चोरी कर ली। मामले की जांच के दौरान पुलिस ने घटनास्थल के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज, तकनीकी साक्ष्यों और अन्य सुरागों की जांच के दौरान पता चला कि इस वारदात में हिसार जिले के खंड अलीपुर निवासी मोनू की संलिप्तता है। पुलिस ने बताया कि आरोपी एक अन्य मामले में जिला जेल में बंद था। इसके बाद पुलिस ने न्यायालय से प्रोडक्शन वारंट प्राप्त कर आरोपी से पूछताछ की गई, और उसकी निशानदेही पर चोरी की गई प्लेटिना मोटरसाइकिल बरामद कर ली गई। रिमांड अवधि पूरी होने के बाद आरोपी को न्यायालय में पेश किया गया, जहां से उसे न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया।

सूचना

मैं, धर्मपाल पुत्र श्री जुगतीराम निवासी बडाला तह. बास, जिला हांसी बयान करता हूं कि मेरा पुत्र रविश चौधरी मेरे कहने-सुनने से बाहर है। इसलिये मैं इसको अपनी चल-अचल सम्पत्ति से बेदखल करता हूं। इससे लेन-देन, व्यवहार करने वाला स्वयं जिम्मेवार होगा। मेरी व मेरे परिवार की कोई जिम्मेवारी नहीं होगी।

खबर संक्षेप

यातायात नियम तोड़ने वालों पर पुलिस की सख्ती

हिसार। जिले में सड़क सुरक्षा सुनिश्चित करने तथा यातायात व्यवस्था को सुचारु बनाए रखने के उद्देश्य से यातायात पुलिस द्वारा विशेष अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के तहत नियमों की अनदेखी करने वाले वाहन चालकों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई करते हुए 440 वाहनों के चालान किए गए। पुलिस अधीक्षक सिद्धांत जैन का कहना है कि यातायात नियम केवल चालान काटने के लिए नहीं, बल्कि आम नागरिकों के जीवन की सुरक्षा के लिए बनाए गए हैं। तेज गति, बिना हेलमेट, बिना सीट बेल्ट, मोबाइल फोन पर बात करते हुए वाहन चलाना, गलत दिशा में वाहन चलाना, रेड लाइट जंप करना तथा अन्य यातायात नियमों का उल्लंघन न केवल आपकी बल्कि अन्य लोगों की जान भी जोखिम में डालता है।

स्कूटी पर हेरोइन ला रहा तस्कर गिरफ्तार

हिसार। पुलिस की एंटी नारकोटिक सैल ने हेरोइन तस्करी में संलिप्त एक आरोपी को गिरफ्तार किया है।आरोपी के कब्जे से 10 ग्राम 49 मिलीग्राम हेरोइन व वारदात में प्रयुक्त स्कूटी बरामद की गई है। एंटी नारकोटिक सैल प्रभारी सब इंस्पेक्टर इन्द्र सिंह गोदारा ने बताया कि सैल के एएसआई विनोद कुमार अपनी पुलिस टीम के साथ अपराध एवं नशा तस्करी की रोकथाम के उद्देश्य से गश्त एवं नाकाबंदी पर राजगढ़ रोड क्षेत्र में मौजूद थे। इसी दौरान प्राप्त सूचना के आधार पर पुलिस टीम ने लघु सचिवालय के समीप साउथ बाइपास पर नाकाबंदी कर एक युवक को स्कूटी सहित काबू किया। पूछताछ में आरोपी ने अपनी पहचान आजाद नगर स्थित गीता कॉलोनी निवासी सोनू के रूप में हुई।

नशा तस्करों पर सख्ती, नशा पीड़ितों को नई जिंदगी

हिसार। जिले को नशा मुक्त बनाने के उद्देश्य से नशा मुक्ति टीम द्वारा लगातार जन-जागरूकता एवं पुनर्वास अभियान चलाया जा रहा है। इसी कड़ी में टीम ने थाना मिल गेट क्षेत्र की महावीर कॉलोनी एवं न्यू महावीर कॉलोनी में विशेष जागरूकता अभियान चलाया। अभियान के दौरान मालाबार फाउंडेशन (एनजीओ) द्वारा संचालित निःशुल्क शिक्षा केंद्र में अध्ययनरत लगभग 50 छात्र-छात्राओं तथा कॉलोनी के युवाओं एवं स्थानीय नागरिकों को नशे के दुष्प्रभावों से अवगत कराया गया।

पुलिस ने हेरोइन सहित एक युवक पकड़ा

नारनौंद। नारनौंद थाना पुलिस ने एक युवक को नशीले पदार्थ सहित गिरफ्तार किया है। युवक की पहचान राजथल निवासी सुरेंद्र उर्फ काला के रूप में हुई हैं। थाना नारनौंद पुलिस की टीम गश्त एवं अपराधों की रोकथाम के दौरान जींद-भिवानी रोड स्थित वाई-प्वाइंट पर मौजूद थी। इसी दौरान पुलिस को सूचना मिली कि गांव राजथल निवासी सुरेंद्र उर्फ काला अपने पास हेरोइन लेकर खड़ा है और किसी को सप्लाई करने की फिराक में है। पुलिस टीम ने तुरंत मौके पर पहुंचकर एक युवक को काबू कर लिया। तलाशी लेने पर आरोपित युवक की पैंट की जेब से एक सफेद पॉलिथीन बरामद हुई, जिसमें हेरोइन मिली।

चानौत में पानी की मांग पर धरना 50वें दिन भी जारी

चानौत में ग्रामीणों ने बनाई दो किलोमीटर लंबी मानव श्रृंखला

हांसी। धरनास्थल से जलघर तक महिलाओं द्वारा बनाई गई मानव श्रृंखला। फोटो : हरिभूमि

सैकड़ों ट्रैक्टरों के साथ निकाला ट्रैक्टर मार्च

- मानव श्रृंखला के माध्यम से ग्रामीणों ने सरकार और प्रशासन तक अपनी मांग पहुंचाने का प्रयास किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हांसी

बरवाला रोड स्थित गांव चानौत में पीने के पानी की मांग पर चल रहे आंदोलन के 50 दिन पूरे होने पर ग्रामीणों ने अपने संघर्ष को और तेज करते हुए धरनास्थल से गांव के जलघर तक करीब दो किलोमीटर लंबी मानव श्रृंखला बनाई। मानव श्रृंखला में बड़ी संख्या में महिलाओं ने भाग लेकर आंदोलन के प्रति अपना समर्थन जताया। इस दौरान महिलाओं ने सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। मानव श्रृंखला के माध्यम से ग्रामीणों ने सरकार और प्रशासन तक अपनी मांग पहुंचाने का प्रयास किया। आंदोलनकारियों का कहना है कि जब तक गांव को स्थायी पेयजल व्यवस्था से नहीं जोड़ा जाता, तब तक उनका धरना, आंदोलन और प्रदर्शन जारी रहेगा।

इसके बाद ग्रामीणों ने सैकड़ों ट्रैक्टरों के साथ जलघर से लेकर धरनास्थल तक ट्रैक्टर मार्च निकाला। ट्रैक्टर मार्च में ट्रैक्टरों पर सवार किसान और ग्रामीण हाथों में बैनर व झंडे लेकर अपनी मांगों के समर्थन में नारेबाजी करते रहे। पूरे मार्च के दौरान गांव और आसपास के क्षेत्र में आंदोलन का प्रभाव साफ दिखाई दिया। धरनास्थल पर वक्ताओं ने कहा कि पिछले 50 दिनों से ग्रामीण शांतिपूर्ण तरीके से अपनी जायज मांगों को लेकर संघर्ष कर रहे हैं, लेकिन अभी तक कोई ठोस समाधान नहीं निकला है। उन्होंने सरकार से जल्द से जल्द गांव को पर्याप्त पेयजल उपलब्ध कराने और लंबे समय से चली आ रही समस्या का स्थायी समाधान करने की मांग की। ग्रामीणों ने चेतावनी दी कि यदि उनकी मांगें शीघ्र पूरी नहीं की गईं तो आंदोलन को और व्यापक रूप दिया जाएगा, जिसकी जिम्मेदारी प्रशासन और सरकार की होगी।

बिजली-पानी जैसी बुनियादी सुविधाओं के लिए भी करना पड़ रहा आंदोलनः सैलजा

हांसी। सिरसा लोकसभा सांसद एवं कांग्रेस महासचिव कुमारी सैलजा ने चानौत गांव पहुंचकर पिछले 50 दिनों से पीने के पानी के लिए धरने पर बैठे ग्रामीणों से मुलाकात कर आंदोलन को अपना समर्थन दिया। इससे पूर्व ग्रामीणों द्वारा सांसद कुमारी सैलजा को ट्रैक्टर पर बैठा कर धरनास्थल ले जाया गया। कुमारी सैलजा ने कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि आज भी लोगों को बिजली और पीने के पानी जैसी मूलभूत सुविधा के लिए सड़कों पर उतरना पड़ रहा है। भाजपा सरकार की नीतियों के कारण जनता बिजली और पानी जैसी बुनियादी सुविधाओं के लिए भी संघर्ष करने को विवश है। सरकार को जनहित के मुद्दों का समाधान करना चाहिए, लोगों को आंदोलन करने पर मजबूर नहीं करना चाहिए। सांसद ने कहा कि पीने के पानी के लिए संघर्ष करना किसी भी सभ्य समाज के लिए अपमान की बात है। पिछले लगभग 12 वर्षों में भाजपा सरकार ने विकास के नाम पर बड़े-बड़े दावे किए, लेकिन गांवों में बुनियादी सुविधाओं की स्थिति लगातार खराब हुई है। धर्म और भावनात्मक मुद्दों की राजनीति करने वाली सरकार जनता की वास्तविक समस्याओं से ध्यान भटका रही है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस हमेशा जनता के अधिकारों और मूलभूत सुविधाओं के लिए संघर्ष करती रही है और आगे भी किसानों, ग्रामीणों तथा आम लोगों की आवाज मजबूती से उठाती रहेगी। उन्होंने प्रदेश सरकार से मांग की कि गांव चानौत की पेयजल समस्या का तत्काल समाधान किया जाए, ताकि लोगों को आंदोलन करने की नौबत न आए।

- सांसद कुमारी सैलजा ने चानौत जल आंदोलन का किया समर्थन

हांसी। धरने पर मौजूद लोगों को संबोधित करती सिरसा लोकसभा सांसद कुमारी सैलजा। फोटो : हरिभूमि

हिसार। सेवानिवृत्त कर्मचारी एसोसिएशन की बैठक में रणनीति पर चर्चा करते पदाधिकारी एवं सदस्य। फोटो : हरिभूमि

रोडवेज महाप्रबंधक के खिलाफ आंदोलन तेज

- 6 को डीसी से मिलेगा सेवानिवृत्त कर्मचारी एसोसिएशन प्रतिनिधिमंडल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हिसार

हरियाणा कर्मचारी महासंघ से संबद्ध सेवानिवृत्त कर्मचारी एसोसिएशन की बैठक पूर्व प्रदेशाध्यक्ष एवं सेवानिवृत्त तहसीलदार नरेश गोयल की अध्यक्षता में क्रांतिमान पार्क में हुई। बैठक में हरियाणा रोडवेज हिसार के महाप्रबंधक के खिलाफ चल रहे आंदोलन को और तेज करने का निर्णय लिया गया। एसोसिएशन ने घोषणा की कि 6 जुलाई को प्रतिनिधिमंडल उपायुक्त, हिसार से मिलकर महाप्रबंधक के तबादले एवं उनके विरुद्ध नियमानुसार कार्रवाई की मांग करेगा, जबकि 8 जुलाई को महाप्रबंधक कार्यालय के समक्ष विशाल धरना दिया जाएगा।

बैठक को संबोधित करते हुए नरेश गोयल ने बताया कि 15 सूत्रीय मांगपत्र को लेकर कर्मचारियों का धरना 51वें दिन में प्रवेश कर चुका है। उन्होंने कहा कि 6 जून को प्रस्तावित चक्का जाम को 5 जून को संयुक्त निदेशक राजेश पूनिया एवं एसडीएम ज्योति मित्तल के आश्वासन पर स्थगित किया गया था, लेकिन एक माह बीत जाने के बाद भी अधिकांश मांगों का समाधान नहीं हुआ।

उन्होंने आरोप लगाया कि कर्मचारियों के टीए बिल, डीए एरियर, शिक्षा भत्ता, एसीपी के मामले, चिकित्सा प्रतिपूर्ति बिल तथा सेवानिवृत्त कर्मचारियों को समय पर सेवानिवृत्ति लाभ देने जैसे अनेक मामलों का वर्षों से निपटारा नहीं किया जा रहा है। इसके अलावा रोडवेज कार्यशाला में खड़े पेड़ों की कथित अवैध कटाई के मामले में मुख्यमंत्री उड़नदस्ता की छापेमारी के बावजूद अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं होने पर भी उन्होंने नाराजगी जताई।

ये रहे मौजूद

एमएल सहगल, पूर्व महाप्रबंधक उदयवीर दुहान, राजपाल नैन, राजबीर सिंधु, सुभाष शर्मा, रोहताश डाबड़ा, मोहिंदर कुंगड़, बलबीर देसवाल, जरनैल सिंह, मोहिंदर स्याढवा, ओमप्रकाश मुवाल, भरत सिंह पूनिया, राजेंद्र नैन सहित बड़ी संख्या में एसोसिएशन के सदस्य उपस्थित रहे।

कुरुक्षेत्र में चल रहे अनिश्चितकालीन पड़ाव में शामिल होंगे अग्रोहा ब्लॉक के शिक्षक

- अतिथि अध्यापकों को नियमित करने की मांग हुई और तेज

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हिसार

हिसार। बैठक में उपस्थित संगठन पदाधिकारी। फोटो : हरिभूमि

राजकीय अनुबंधित अध्यापक संघ, ब्लॉक अग्रोहा की बैठक शहीद भाकर स्मारक, अग्रोहा में महेश शास्त्री की अध्यक्षता में हुई। बैठक का संचालन विनय शास्त्री ने किया। बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि अतिथि अध्यापकों को नियमित करने की मांग को लेकर कुरुक्षेत्र स्थित मुख्यमंत्री कैंप कार्यालय के बाहर चल रहे अनिश्चितकालीन पड़ाव में ब्लॉक अग्रोहा के अतिथि अध्यापक 4 जुलाई को शामिल होंगे और 24 घंटे तक आंदोलन स्थल पर डटे रहेंगे। बैठक को संबोधित करते हुए संघ के राज्य महासचिव भूपेंद्र सिंह, ईश्वर बरवाला, पंकज कुमार, महेश शास्त्री और विनय शास्त्री ने कहा कि 17 अप्रैल 2026 को सर्वोच्च न्यायालय ने हरियाणा सरकार की 16 एवं 18 जून 2014 की नियमितीकरण नीतियों को वैध ठहराया है। इसके बाद 29 अप्रैल 2026 तथा 27 मई 2026 को पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट ने भी अतिथि अध्यापकों के नियमितीकरण के पक्ष में आदेश पारित किए हैं। वक्ताओं ने कहा कि प्रदेश के सरकारी स्कूलों में कार्यरत सभी अतिथि अध्यापक वर्ष 2014 की नियमितीकरण नीतियों के तहत निर्धारित सभी पात्रता शर्तों को पूरा करते हैं।

स्वस्थ शरीर के साथ स्वच्छ वातावरण भी जरूरी: रणधीर

- गांव भिवानी रोहिल्ला में चलाया स्वच्छता अभियान
- विधायक ने स्वयं झाड़ू लगाकर लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हिसार

हिसार। योग शिविर में हिस्सा लेते विधायक रणधीर पनिहार। फोटो : हरिभूमि

नलवा विधानसभा क्षेत्र के विधायक रणधीर पनिहार ने शनिवार को हलके के गांव भिवानी रोहिल्ला में स्वच्छता अभियान चलाकर ग्रामीणों को स्वच्छता का संदेश दिया। इस अवसर पर विभिन्न गांवों के सरपंच, गणमान्य नागरिक, युवा एवं ग्रामीण बड़ी संख्या में अभियान से जुड़े। सभी ने मिलकर गांव के चौपाल, स्कूल, अस्पताल आदि सार्वजनिक स्थलों की साफ-सफाई की और स्वच्छ वातावरण बनाए रखने का संकल्प लिया।

स्वच्छता अभियान से पूर्व प्रातःकाल योग शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें विधायक रणधीर पनिहार ने ग्रामीणों के साथ योगाभ्यास किया। उन्होंने कहा कि योग स्वस्थ जीवन का आधार है और नियमित योग करने से शरीर स्वस्थ एवं मन प्रसन्न रहता है। उन्होंने लोगों से अपने दैनिक जीवन में योग को अपनाने का आह्वान किया। इसके बाद आयोजित स्वच्छता अभियान में विधायक ने स्वयं झाड़ू लगाकर लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया। उन्होंने कहा कि स्वस्थ शरीर के साथ-साथ स्वच्छ वातावरण भी उतना ही आवश्यक है। यदि हमारा आसपास का वातावरण स्वच्छ रहेगा तो अनेक बीमारियों से बचाव संभव होगा और समाज में सकारात्मक परिवर्तन आएगा।

विधायक रणधीर पनिहार ने कहा कि स्वच्छता केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक का नैतिक दायित्व है। सभी को अपने घर, गांव, विद्यालय, सरकारी संस्थानों तथा सार्वजनिक स्थानों की नियमित साफ-सफाई में योगदान देना चाहिए। उन्होंने ग्रामीणों से आह्वान किया कि वे स्वच्छता को एक दिन का कार्यक्रम न मानकर इसे अपनी दैनिक आदत बनाएं तथा दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करें। इस अवसर पर सरपंच बलजीत, पवन, रामबीर, महेंद्र, सुरजीत, शमशेर, कुलदीप व सुभाष शर्मा सहित अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

हांसी बाल भवन में अत्याधुनिक ई-लाइब्रेरी का शुभारम्भ

- सर्व कल्याण मंच वहन करेगा ई-लाइब्रेरी का संपूर्ण खर्च

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हांसी

जिला बाल कल्याण परिषद् द्वारा बच्चों एवं युवाओं को आधुनिक एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुविधाएं उपलब्ध कराने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल करते हुए शनिवार को बाल भवन परिसर में अत्याधुनिक ई-लाइब्रेरी का शुभारम्भ किया गया। कार्यक्रम में केंद्रीय ऊर्जा एवं शहरी विकास मंत्री मनोहर लाल खट्टर के निजी सचिव नवीन कौशिक ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। उन्होंने दीप प्रज्ज्वलित व रिबन काटकर ई-लाइब्रेरी का विधिवत उद्घाटन किया तथा बाद में बाल भवन परिसर में पौधरोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश भी दिया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि नवीन कौशिक ने ई-लाइब्रेरी का अवलोकन करते हुए कहा कि शिक्षा किसी भी समाज की सबसे बड़ी शक्ति होती है और वर्तमान डिजिटल युग में विद्यार्थियों को आधुनिक तकनीक से जोड़ना समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि इस ई-लाइब्रेरी का निर्माण सर्व कल्याण मंच द्वारा कराया जा रहा है तथा इसके संचालन एवं रखरखाव का संपूर्ण खर्च भी मंच ही वहन करेगा, जिससे हांसी जिले के विद्यार्थी बाल भवन में आकर आधुनिक डिजिटल सुविधाओं का निःशुल्क लाभ प्राप्त कर सकेंगे। उन्होंने कहा कि ई-लाइब्रेरी विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण अध्ययन सामग्री, ऑनलाइन शिक्षण संसाधन, ई-बुक्स तथा विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराएगी।

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर सर्व कल्याण मंच के प्रधान रविंद्र अत्री, कार्यक्रम अधिकारी मोनिका, प्रधान अभय राम आह्वान, जयप्रकाश नौलिया, रामलाल नौलिया, कर्मबीर, वेदप्रकाश, महाबीर, धर्मवीर सुपरवाइजर, नरेश उमरा व जिला बाल कल्याण परिषद् के आजीवन सदस्य, गणमान्य नागरिक, शिक्षाविद, कर्मचारी, सर्व कल्याण मंच के पदाधिकारी तथा विद्यार्थी उपस्थित रहे।

पार्षद बिड़लान ने पटेल नगर में चलाया स्वच्छता अभियान

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हिसार

हिसार। पार्षद राजेन्द्र बिड़लान व अन्य पटेल नगर में चलाया स्वच्छता अभियान के दौरान झाड़ू लगाते हुए। फोटो : हरिभूमि

स्वच्छ भारत मिशन अभियान के तहत वार्ड नं.16 के पार्षद राजेन्द्र बिड़लान ने अपनी टीम के साथ पटेल नगर मार्किट के पीछे शनि मंदिर वाली गली से स्वच्छ नगर हो हमारा स्वच्छता अभियान को स्वयं झाड़ू लगा कर प्रारंभ किया। इस मौके पर पार्षद राजेन्द्र बिड़लान ने कहा कि जिस प्रकार घर की गृहणी प्रतिदिन घर में सफाई करती है, ताकि घर मे माता लक्ष्मी जी का वास जो इसी प्रकार हमें अपने घरों, अपने प्रतिष्ठानों के बाहर भी सफाई का विशेष ध्यान रखना चाहिए। स्वच्छ भारत अभियान के तहत सफाई करने से बीमारियों में कमी, स्वास्थ्य सुधार, सुरक्षित पर्यावरण, और आर्थिक विकास जैसे अनेक महत्वपूर्ण लाभ होते हैं। इससे नागरिकों के जीवन स्तर में सुधार आता है और देश का सामाजिक-आर्थिक विकास होता है। पार्षद राजेन्द्र बिड़लान ने कहा की वार्ड में समय समय पर स्वच्छता अभियान जारी रहेगा। इस मौके पर उनके साथ चन्द्रभान गांधी, राजकुमार मदान, अजय खन्ना, नरेश महता, भारत भूषण शर्मा, गौरव नागपाल के अलावा ब्राइट फ्यूचर एनजीओ के सदस्य उपस्थित रहे।

सरेआम सट्टा खाईवाली करते आरोपी काबू

हांसी। जिले में अवैध गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत सीआईए-2 हांसी की टीम ने सार्वजनिक स्थान पर सरेआम सट्टा खाईवाली कर रहे एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से 10,700 रुपये की नकद सट्टा राशि, सट्टा पर्चियां तथा सट्टा लिखने वाला बॉल पेन बरामद कर जब्त कर लिया है। गिरफ्तार आरोपी की पहचान सुमित, निवासी यति नगर कॉलोनी एवं हाल निवासी दड़ा बाजार, हांसी के रूप में हुई है। मामले की जानकारी देते हुए उप निरीक्षक कर्मबीर ने बताया कि सीआईए-2 की टीम गश्त एवं अपराधों की रोकथाम के लिए क्षेत्र में मौजूद थी। इसी दौरान पुलिस को सूचना मिली कि न्यू ऑटो मार्केट के पास एक व्यक्ति खुलेआम सट्टा खाईवाली कर रहा है। सूचना के आधार पर पुलिस टीम ने तुरंत योजनाबद्ध तरीके से मौके पर रेड कर आरोपी को मौके से काबू कर लिया गया।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, 783, पी.एल.ए., नजदीक टाउन पार्क, हिसार
फोन : 7988727916, 9315429403, 9253681005

सकारात्मक सोच, व्यक्तित्व विकास, लक्ष्य निर्धारण व समय प्रबंधन का दिया संदेश

ट्रस्ट हर घर उद्यमी मिशन को अपनाकर युवाओं को स्वावलंबन की राह पर अग्रसर कर रहा है

इंदिरा देवी ट्रस्ट ने युवाओं को करियर और व्यक्तित्व विकास सिखाया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हिसार

हिसार। इंदिरा देवी चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा आयोजित सेमिनार में विद्यार्थियों से रूबरू होते अतिथिगण। फोटो : हरिभूमि

सेवार्थ भाव से युवाओं के सर्वांगीण विकास व स्वावलंबन के लिए प्रयत्नशील इंदिरा देवी चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा युवाओं के लिए सेमिनार का आयोजन किया गया। भारत सरकार के श्रम एवं रोजगार मंत्रालय के अंतर्गत संचालित नेशनल करियर सर्विस सेंटर के नए सत्र के विद्यार्थियों के लिए करियर बिल्डिंग, मोटिवेशन, पर्सनेल्टी डेवल्पमेंट पर आधारित इस सेमिनार में युवाओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। सेमिनार में हिसार के राजकीय महिला महाविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग से डॉ. रणधीर सिंह (प्रोफेसर) एवं सतबीर सिंह मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। इस दौरान इंदिरा देवी चैरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष रजत गुप्ता व स्टाफ सदस्य भी विशेष रूप से मौजूद हरे। वक्ताओं ने विद्यार्थियों को सकारात्मक सोच, आत्मविश्वास, मानसिक स्वास्थ्य, व्यक्तित्व विकास, लक्ष्य निर्धारण, समय प्रबंधन, प्रभावी संवाद कौशल, तनाव प्रबंधन तथा प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर प्रेरणादायक एवं व्यवहारिक मार्गदर्शन प्रदान किया। इस दौरान रजत गुप्ता ने बताया कि इंदिरा देवी चैरिटेबल ट्रस्ट हर घर उद्यमी मिशन को अपनाकर युवाओं को स्वावलंबन की राह पर अग्रसर कर रहा है। रउन्होंने विद्यार्थियों को कहा कि सफलता केवल डिग्री से नहीं बल्कि अनुशासन, निरंतर सीखने की इच्छा, सकारात्मक सोच एवं सही मार्गदर्शन से प्राप्त होती है।

भैंस व्यापारी के शव का हुआ पोस्टमार्टम, पुलिस जांच में जुटी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौंद

लाखों रुपये के लेन-देन को लेकर सुसाइड करने वाले गांव सुलचानी के भैंस व्यापारी बारू राम के शव का शनिवार को पोस्टमार्टम किया गया। पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया। बता दें कि बारू राम का अन्य लोगों के साथ लाखों रुपये का लेन-देन था। इसी सदमे को लेकर व्यापारी ने शुक्रवार को जहरीला पदार्थ निगल लिया था जिसके कारण उसकी मौत हो गई थी। पुलिस इस मामले की गहनता से जांच करने में जुटी हुई है। सुसाइड नोट के आधार पर छह युवकों पर विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया है। सुलचानी निवासी मृतक 54 वर्षीय बारु राम के बेटे सुमित ने बताया कि उसके पिता भैंसों का व्यापार करते थे और गांव सहित अन्य व्यापारियों से उनका लेनदेन था। गांव सुलचानी के आकाश, अजय, कुम्भा के बुरा, नारनौंद के हरिओम, ढाणी ब्राह्मण के तारा ओर पाली के बोबी की तरफ उनके लाखों रुपए बकाया थे। बार बार मांगने पर भी वो लोग पैसे नहीं दे रहे थे। वो सदमे में था। इसी के कारण जहरीला पदार्थ निगल कर अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली।

उधर, थाना प्रभारी रमेश कुमार ने बताया कि मृतक का पोस्टमार्टम करवा कर परिजनों को सौंप दिया है। छह युवकों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया हैं। मामले की हर पहलू से जांच की जा रही हैं।

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक, रविवार 5 जुलाई 2026

क्या कभी हो पाएगी एलियन से मुलाकात !

क्या एलियन कभी पृथ्वी पर आएंगे? क्या उनसे हमारी मुलाकात हो पाएगी? इस सवाल का फिलहाल कोई सीधा 'हां' या 'ना' में जवाब देना मुश्किल है। एलियंस का धरती पर आना भले ही अभी विज्ञान कथाओं की तरह लगता हो, लेकिन वैज्ञानिक प्रयासों से भविष्य में, असंभव सा लगने वाला कुछ भी संभव हो सकता है।

कवर स्टोरी
शिखर चंद जैन

रात के समय जब हम आसमान में टिमटिमाते हुए तारों को देखते हैं, तो हमारे मन में एक सवाल बार-बार उठता है, 'क्या इस विशाल ब्रह्मांड में हम अकेले हैं?' या फिर किसी दूर के ग्रह पर हमारे जैसे ही या हमसे भी ज्यादा समझदार जीव रहते हैं? इन्हीं बाहरी दुनिया के जीवों को हम 'एलियन' या 'एक्स्ट्राटेरेस्ट्रियल' कहते हैं। गणितीय संभावनाओं को देखें तो ब्रह्मांड में कहीं न कहीं जीवन जरूर होना चाहिए। लेकिन अंतरिक्ष की असीम दूरियों को देखते हुए, उनका हमारे पास आना या हमारा उन तक पहुंचना बहुत ही कठिन काम है। वैज्ञानिकों का मानना है कि आने वाले कुछ दशकों में, जैसे-जैसे हमारी तकनीक और बेहतर होगी, हम शायद सौर मंडल के किसी चांद या बाहरी ग्रह पर जीवन के छोटे अंश (जैसे बैक्टीरिया) खोजने में सफल हो जाएंगे।

क्यों बरकरार है संभावना

वैज्ञानिकों के अनुसार, हमारे ब्रह्मांड में अरबों आकाशगंगाएं हैं और हर आकाशगंगा में खरबों तारे और ग्रह हैं। इतनी बड़ी जगह में सिर्फ हमारी पृथ्वी पर ही जीवन हो, ऐसा होना थोड़ा मुश्किल लगता है। इसलिए लगता है कि इस यूनिवर्स में कोई न कोई दूसरी दुनिया हो सकती है। खगोल वैज्ञानिक भी इस विषय पर यही सोचते हैं। इसीलिए वे सालों से एलियंस की खोज कर रहे हैं।

क्या एलियन पृथ्वी पर आएंगे!

हालांकि आम लोगों का मानना है कि कभी न कभी एलियन पृथ्वी पर आए होंगे या आएंगे। लेकिन वैज्ञानिक इस सवाल का जवाब तर्क के आधार पर खोजते हैं। एलियन पृथ्वी पर क्यों आना चाहेंगे? इसके वे कई तर्क देते हैं-

नए घर की खोज: जैसे हमारे वैज्ञानिक मंगल ग्रह पर जीवन तलाश रहे हैं, वैसे ही एलियन भी अपने रहने के लिए एक नए और सुरक्षित ग्रह की तलाश में पृथ्वी पर आ सकते हैं।

संसाधनों की तलाश: अगर उनके अपने ग्रह के प्राकृतिक संसाधन जैसे पानी, खनिज या ऊर्जा आदि खत्म हो गए हों, तो वे पृथ्वी के संसाधनों का उपयोग करने के लिए यहां का रुख कर सकते हैं।

जिज्ञासा और शोध: हो सकता है कि एलियन भी हमारी पृथ्वी के वैज्ञानिकों की तरह खोजी स्वभाव के हों। वे ब्रह्मांड के दूसरे जीवों यानी हम इंसानों के बारे में जानने और हमसे दोस्ती करने के लिए हमारे पास आ सकते हैं।

तकनीकी श्रेष्ठता: अगर कोई सभ्यता हमसे लाखों साल पुरानी है, तो उनके पास ऐसे स्पेसशिप हो सकते हैं जो रोशनी की रफ्तार से

भी तेज चल सकें। ऐसी तकनीक होने पर उनके लिए पृथ्वी तक आना बहुत आसान होगा।

इसके विपरीत एलियन का आना क्यों मुश्किल है, इसके भी कुछ तर्क देते हैं-

अत्यधिक दूरी: ब्रह्मांड इतना बड़ा है कि हमारे सबसे करीबी तारे प्रॉक्सिमा सेंचुरी तक पहुंचने में भी आज की तकनीक से हजारों साल लग जाएंगे। एलियंस के लिए भी इतनी लंबी दूरी तय करना एक बड़ी चुनौती होगी।

समय का चक्र: हो सकता है कि ब्रह्मांड के किसी कोने में एलियन रहे हों, लेकिन वे इंसानों के पैदा होने से करोड़ों साल पहले ही खत्म हो चुके हों, या फिर वे तब आएंगे, जब इंसान धरती से गायब हो चुके होंगे।

संवाद की कमी: हमारी भाषा, रेडियो सिग्नल और सोचने का तरीका उनसे बिल्कुल अलग हो सकता है। मुमकिन है कि वे हमारे सिग्नलों को समझ ही न पा रहे हों।

वैज्ञानिक शोध और प्रयास

वैज्ञानिकों ने एलियंस को ढूंढ़ने और उनसे संपर्क करने के लिए कई प्रयास किए हैं।

सेटी प्रोजेक्ट: सर्च फॉर एक्स्ट्रा टेरेस्ट्रियल इंटेलिजेंस, दुनिया का सबसे बड़ा संगठन है, जो अंतरिक्ष से आने वाले रहस्यमयी सिग्नलों पर नजर रखता है। वैज्ञानिक बड़े-बड़े रेडियो टेलीस्कोप का इस्तेमाल करके आसमान से आने वाली आवाजों और तरंगों को सुनते हैं, ताकि एलियंस का कोई संदेश पकड़ा जा सके।

वोयाजर के गोल्डन रिकॉर्ड्स: साल 1977 में नासा ने अंतरिक्ष में दो स्पेसक्राफ्ट भेजे थे, जिनका नाम 'वोयाजर 1' और 'वोयाजर 2' है। इन स्पेसशिप में एक तांबे की बनी सीडी जैसी 'गोल्डन डिस्क' रखी गई है। इस डिस्क में पृथ्वी की आवाजें, संगीत, 55 भाषाओं में नमस्कार और हमारे ग्रह का नक्शा दर्ज है, ताकि अगर कभी यह किसी एलियन को मिले, तो वे हमारे बारे में जान सकें।

यूएफओ और यूएपी की जांच: दुनिया भर में कई बार आसमान में उड़ने वाली अजीबो-गरीब चीजों जैसे उड़न तश्तरी को देखने का दावा किया गया है। अब अमेरिकी सरकार और नासा जैसी एजेंसियां इन्हें 'यूएपी' (अनआइडेंटिफाइड एनोमैलुअस फैनोमेना) कहकर इन पर आधिकारिक रिसर्च कर रही हैं, ताकि यह साफ हो सके कि ये एलियंस के यान हैं या कोई प्राकृतिक घटना।

बहरहाल, भविष्य में कभी दूसरे ग्रह के वासियों एलियंस से पृथ्वीवासियों की कभी मुलाकात हो पाएगी या नहीं यह तो अभी नहीं कहा जा सकता लेकिन दुनिया भर के वैज्ञानिक इस कोशिश में हर संभव प्रयास कर रहे हैं। *

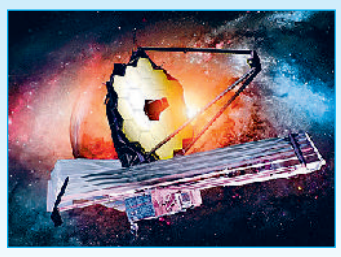

केपलर-जेम्स वेब टेलीस्कोप

नासा के इन आधुनिक टेलीस्कोपों का काम अंतरिक्ष में 'एक्सोप्लैनेट्स' यानी हमारे सौर मंडल से बाहर के ग्रह को खोजना है। वैज्ञानिकों ने अब तक हजारों ऐसे ग्रह खोजे हैं, जो 'गोल्डीलॉक्स जोन' में हैं। इसका मतलब है कि ये ग्रह अपने तारे से न तो बहुत ज्यादा गर्म हैं और न ही बहुत ज्यादा ठंडे, जहां पृथ्वी की तरह पानी और जीवन मौजूद हो सकता है। इसमें जीवन की संभावना भी हो सकती है।

मार्स मिशन

हमारे सबसे नजदीकी ग्रह मंगल पर पानी और जीवन के निशान खोजने के लिए भारत का 'मंगलयान', नासा के 'परसवेरेंस' रोवर जैसे कई मिशन भेजे गए हैं। इनके जरिए वैज्ञानिक मंगल ग्रह पर सूक्ष्मजीवों के जीवाश्म ढूंढ़ रहे हैं, जो अंतरिक्ष वासी एलियन या जीवन का पहला ठोस सबूत हो सकते हैं।

चिंताजनक है लगातार बढ़ता अंतरिक्ष में वेस्ट मैटर

जिस तरह से हम सबने अपनी पृथ्वी पर प्रदूषक वस्तुओं और कूड़े-कचरे का अंबार लगा रखा है, कुछ ऐसा ही हाल अंतरिक्ष का भी होता जा रहा है। स्पेस में स्पेसक्राफ्ट, एस्ट्रोनॉट्स और सैटेलाइट्स का वेस्ट मैटर भविष्य में गंभीर समस्या पैदा कर सकता है।

स्पेस इश्यू
अंजू जैन

जब हम रात में आसमान की तरफ देखते हैं, तो हमें टिमटिमाते तारे, चंद्रमा और कभी-कभी गुजरते हुए सैटेलाइट्स (उपग्रह) दिखाई देते हैं। यह नजारा बेहद जादुई लगता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि हमारे इस खूबसूरत अंतरिक्ष में एक बहुत बड़ी मुसीबत धीरे-धीरे पैर पसार रही है? इस मुसीबत का नाम है-'अंतरिक्ष का कचरा' या 'स्पेस डेब्री'।

क्या है स्पेस डेब्री: जैसे हम अपनी पृथ्वी पर प्लास्टिक, रैपर्स और खराब सामान फेंककर इसे गंदा कर रहे हैं, ठीक वैसे ही इंसानों ने अंतरिक्ष को भी कबाड़खाना बनाना शुरू कर दिया है। अंतरिक्ष कचरा या स्पेस जंक उन सभी मानव-निर्मित बेकार चीजों को कहते हैं, जो अब किसी काम की नहीं रहीं और पृथ्वी के चारों ओर अंतरिक्ष में चक्कर काट रही हैं। इस कचरे में बेकार हो चुके पुराने सैटेलाइट्स, रॉकेट्स के छूटे हुए टुकड़े, अंतरिक्ष यात्रियों के हाथ से छूटे हुए औजार (जैसे स्क्रू-ड्राइवर, ग्लव्स) और सैटेलाइट्स के आपस में टकराने से बने करोड़ों छोटे-छोटे टुकड़े शामिल हैं। वैज्ञानिकों के अनुमान के अनुसार, इस समय अंतरिक्ष में लाखों छोटे-बड़े टुकड़े तैर रहे हैं, जो एक बड़े खतरे की घंटी हैं।

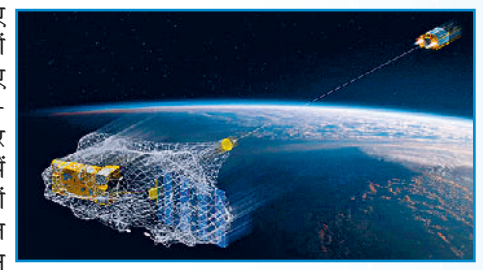

स्पेस डेब्री में शामिल चीजें: स्पेस डेब्री में बहुत कुछ हो सकता है। जैसे-जब किसी उपग्रह का जीवनकाल खत्म हो जाता है या उसका ईंधन समाप्त हो जाता है, तो वह वहीं अंतरिक्ष में निष्क्रिय होकर घूमने लगता है। उपग्रहों को अंतरिक्ष में छोड़ने के बाद रॉकेट के निचले और ऊपरी हिस्से अलग हो जाते हैं। ये हिस्से अंतरिक्ष में ही तैरते रह जाते हैं। जब दो सैटेलाइट्स आपस में टकराते हैं, तो उनके परखच्चे उड़ जाते हैं। एक टक्कर से हजारों नए छोटे-छोटे तीखे टुकड़े बन जाते हैं।

कुछ देश अपनी मिसाइल क्षमता को जांचने के लिए अंतरिक्ष में अपने ही पुराने सैटेलाइट को मिसाइल से उड़ा देते हैं। इससे पल भर में बेशुमार कचरा फैल जाता है।

स्पेस वेस्ट से संकट: अब आप सोच रहे होंगे कि अंतरिक्ष तो इतना विशाल है, फिर वहां थोड़े से कबाड़ से क्या फर्क पड़ता है? अंतरिक्ष हमारा भविष्य है। अगर आज हमने इसकी सफाई पर ध्यान नहीं दिया, तो आने वाली पीढ़ी के लिए ब्रह्मांड के रहस्य जानने के सारे रास्ते बंद हो जाएंगे। इसके कई खतरनाक परिणाम हो सकते हैं। अंतरिक्ष में ये टुकड़े धीरे-धीरे नहीं तैरते। इनकी रफ्तार बंदूक की गोली से भी 10 से 15 गुना तेज होती है, लगभग 28,000 किलोमीटर प्रति घंटा। इतनी रफ्तार में एक छोटा-सा पेंट का टुकड़ा या पेंच भी किसी सैटेलाइट से टकराए, तो उसे पूरी तरह तबाह कर सकता है। इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन में हमेशा हमारे वैज्ञानिक रहते हैं। यदि कोई बड़ा टुकड़ा स्पेस स्टेशन से टकरा जाए, तो वहां रहने वाले अंतरिक्ष यात्रियों की जान पर बन आ सकती है। उन्हें कई बार खुद को बचाने के लिए आपातकालीन कैप्सूल में छिपना पड़ता है।

हम मोबाइल के जरिए जो बात करते हैं, जीपीएस से रास्ता देखते हैं, टीवी देखते हैं और मौसम का पूर्वानुमान लगाते हैं, वे सब अंतरिक्ष में मौजूद सैटेलाइट्स की वजह से संभव होता है। अगर कचरे की वजह से ये सैटेलाइट्स नष्ट हो गए, तो हमारी पृथ्वी की आधुनिक लाइफलाइन एकदम रुक-सी जाएगी। अगर अंतरिक्ष में कचरा बहुत ज्यादा बढ़ गया, तो वे आपस में टकराकर और अधिक कचरा बनाएंगे। एक समय ऐसा आएगा कि पृथ्वी के चारों ओर कचरे की ऐसी घनी दीवार बन जाएगी कि इंसान कभी नया रॉकेट या सैटेलाइट अंतरिक्ष में भेज ही नहीं पाएगा। हम हमेशा के लिए पृथ्वी पर कैद हो जाएंगे।

निदान और समाधान: अंतरिक्ष में बढ़ रहे कचरे की इस समस्या के समाधान के लिए वैज्ञानिक लगातार प्रयास कर रहे हैं। दुनिया भर की स्पेस एजेंसियां जैसे भारत की इसरो, अमेरिका की नासा इस मलबे को साफ करने के लिए बेहद अनोखे तरीकों पर काम कर रही हैं। वैज्ञानिक ऐसे विशेष सैटेलाइट बना रहे हैं, जो अंतरिक्ष में जाकर बड़े मलबे पर जाल फेंकेंगे या हारपून (भाला) मारकर उसे पकड़ेंगे और खींचकर पृथ्वी के वायुमंडल की तरफ ले आएंगे।

कुछ जापानी कंपनियां ऐसे सैटेलाइट्स का परीक्षण कर रही हैं, जिनमें बहुत शक्तिशाली चुंबक लगे होंगे। ये चुंबक लोहे और धातु के मलबे को अपनी ओर आकर्षित करके चिपका लेंगे। इस तरह कई और तकनीकें अपनाई जा रही हैं। संभव है इसका स्थायी समाधान खोज लिया जाएगा। *

गजल
हबीब कैफी

चला गया कोई

उम्र अपनी बढ़ा गया कोई
नाम लेते ही आ गया कोई
मैंने थामा था हाथ कांटों में
फूल पाकर छुड़ा गया कोई
उसके सारे निशान जिंदा हैं
कैसे कह दूं चला गया कोई
इक तने पर लिखे थे बरसों से
नाम दोनों मिटा गया कोई
नींद यूं ही नहीं हुई गायब
तेरे किस्से सुना गया कोई
सिर्फ इक बात मैंने पूछी थी
बातें क्या-क्या सुना गया कोई
जिक्र जब भी वफा का आया है
सर झुका कर चला गया कोई

व्यंग्य / सूर्यकुमार पांडेय

महंगाई से मुलाकात

चाहने को हम भी बहुत कुछ चाहते हैं। हमारी पहली चाहत तो यह ही है कि अपने पास अकूत वैध संपत्ति हो। वैध इसलिए, क्योंकि बुल्डोजर से सबको डर लगता है। बड़े-बड़े मुर्गे हलाल हो गए, फिर भला इस पिद्दी के शोरबे की क्या ही औकात है? हमारी दूसरी चाहत है कि महंगाई नाम की चीज को अपने देश से धक्के मार कर बाहर निकाल देना चाहिए। अंतर्मन में कुछ ऐसी भी चाहतें हैं, जिन्हें सार्वजनिक कर दें तो जूते पड़ने लगेंगे। हमारे एक मित्र ने एक महिला को सिर्फ 'आइ लव यू' कहा था। एक वह दिन था और एक आज का दिन है, अस्पताल से लौटकर आया है और प्रत्येक महिला को बुआ-दीदी से नीचे नहीं बोलता है।

इंसान कामनाओं का कोष है। मनुष्य की इच्छाएं अनंत हैं। सबको फेसबुक-एक्स आदि के दरिया में डालकर अपनी भड़ास निकालने से अच्छा है कि भाग्यवादी बन जाओ। 'जाही विधि राखे राम, ताही विधि रहिए।' हम भी रह ही रहे हैं। घोर महंगाई की चपत खाकर भी हंस रहे हैं। यूं किसी के चाहने या न चाहने से क्या होता है? भला मैं भी कहां चाहता था, फिर भी आज महंगाई से मेरी मुलाकात हो ही गई। वैसे यह कोई नई बात नहीं है। पहले कभी-कभार भेंट होती थी। इन दिनों वह मुझसे रोज ही किसी-न-किसी बहाने मेरे घर पर मिलने आ जाया करती है। जब मैं घर से बाहर रहता हूं तो वह वहां पर भी मुझसे टकरा जाती है। बाजार जाऊं तो वहां भी मिल जाती है। सड़क पर चल रहा होता हूं, तब भी वह हमारा पीछा नहीं छोड़ती है। पत्नी कहती है, 'यह मुई मेरी सौत है। इसकी निगाह तुम्हारे शरीर के साथ तुम्हारी जेब पर भी रहती है।'

मैं अकसर यह महसूस करता हूं कि मेरी जेब में रखा हुआ पर्स भी जरूरत से ज्यादा दुबला हो चुका है। महंगाई डायन के प्रकोप के चलते 'चंद क्वॉइन' ही शेष बचे हुए हैं। गनीमत है कि वह पूरी तरह खाली नहीं हुआ है। शायद इसी दुबले पर्स पर महंगाई डाका डालने पर उतारू है। जिसके पास धन नहीं है, उसको न चोरी का डर सताता है और न रहजनी का। उसे एकमात्र डर सताता है तो महंगाई का।

मेरा प्रतिदिन महंगाई से इसी तरह मिलना होता रहा तो एक दिन इस गरीब की जान ही निकल जाएगी। आप जानते हैं कि गरीब की जान उसकी हलक में अटकी होती है। यह उस चिड़िया की तरह होती है, जिसे जब तक दाना-पानी मिलता रहता है, चहकती रहती है, जिस दिन मिलना बंद हो गया, फुर्र से उड़ जाती है। लोग यूं ही प्राण को पखेरू नहीं कहते हैं।

मैं इस नामाकूल महंगाई से कितना भी बचना चाहता हूं, लेकिन वह है कि हाथ धोकर मेरे गले पड़ती जा रही है। आज महंगाई फिर एक बार मुझसे मिलने आई है। वह आवश्यकता से अधिक मोटी दिख रही है। पिछली बार जब उससे मिलना हुआ था, तब भी वह मोटी ही थी, लेकिन इस बार उसके शरीर की चर्बी पर एक और परत चढ़ चुकी है। वैसे भी जो प्रतिदिन दूसरों की जेब पर डाका डालता हो, उसका मोटा हो जाना अचरज की बात नहीं है। मैं अपने आस-पास के ऐसे तमाम लोगों को जानता हूं, जो दूसरों को लूटते रहते हैं और मोटे हो जाते हैं। महंगाई भी पुष्ट हो रही है। वह मुझसे कहने लग गई, 'तुम मेरे नाम का रोना रोते रहते हो, मैंने सोचा आज एक बार और मिल लेती हूं! कहो, कैसे मिजाज हैं?' मैंने कहा, 'मिजाज की छोड़ो। तुमने हमें कहीं का नहीं छोड़ा है। तुम जिस अनुपात में मोटी होती चली जा रही हो, हम उसी अनुपात में दुबले हो रहे हैं। उधर तुम्हारी खुराक बढ़ती जा रही है, इधर हम अपने को किसी दिहाड़ी मजदूर की पगार जैसा बेबस पाते हैं।'

महंगाई जैसे आज विश्व हास्य दिवस मनाने के मूड में थी। वह पहले खूब हंसी, फिर मुझे छेड़ती हुई बोली, 'देख रही हूं। तुम्हारे पांवों में बेबसी के घुंघरू बंधे हुए है, फिर भी तुम ठुमक रहे हो। तुम जैसे बकरे को कहां पता है कि कल मैं तुमको किस भारी-भरकम रूप में मिलने वाली हूं!' *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

विडंबनाओं पर कटाक्ष

आज के बहुरूपिए समय में तमाम तरह की विडंबनाओं और विसंगतियों के संग जीने के लिए हम सब इतने अभ्यस्त हो गए हैं कि किसी भी प्रकार के विद्रूप में असहज महसूस नहीं करते हैं। लेकिन एक व्यंग्यकार की सजग दृष्टि न केवल जीवन और व्यवस्था में धंसे विद्रूप को इंगित करती है, उस पर कटाक्ष भी करती है। सुपरिचित व्यंग्यकार मुरली मनोहर श्रीवास्तव के ऐसे ही चुने हुए 65 व्यंग्यों का संग्रह 'डेढ़ इंच मुसकान वाले लोग' हाल में छपकर आया है। इनमें कहीं वे नेशनल कैरेक्टर से लेकर, आटा से ज्यादा डाटा की चिंता करते नजर आते हैं, तो

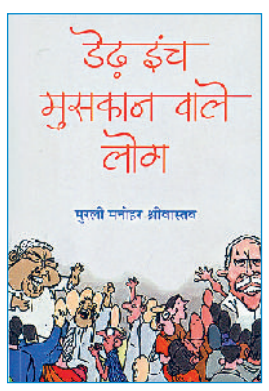

कहीं चुटकी लेते हुए मीडिया का महिमा मंडन करते दिखते हैं। 'ऑफिस रस' शीर्षक व्यंग्य में वह लिखते हैं, 'जिसे एक बार ऑफिस रस की लत लग गई, वह इसकी प्रॉपर डोज के बिना रह ही नहीं पाता। वह कहीं भी रहे, किसी भी हाल में पड़ा हो, इस रस की प्राप्ति के लिए छटपटाता रहता है।' हर खास-ओ-आम की जिंदगी में आज की तारीख में इंटरनेट डाटा का क्या महत्व हो चुका है, इस बारे में व्यंग्यकार की टिप्पणी ध्यान देने योग्य है। 'आटा और डाटा' शीर्षक व्यंग्य में वह कहते हैं, 'कई बार लगता है कि आटा न भी मिले तो चलेगा पर डाटा खत्म हो गया तो जीकर क्या करेंगे? लड़ाई यह है कि आटा जन-जन तक पहुंचा कि डाटा?' *

पुस्तक: डेढ़ इंच मुसकान वाले लोग (व्यंग्य संग्रह), **लेखक:** मुरली मनोहर श्रीवास्तव, **मूल्य:** 400 रुपए, **प्रकाशक:** विद्या विहार, नई दिल्ली

हरिभूमि रविवार भारती
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक, रविवार 5 जुलाई 2026

सीजनल टूरिज्म / समीर चौधरी

हर नेचर लवर टूरिस्ट, मानसून में भीगी हरी-भरी पहाड़ी वादियों को करीब से निहारना चाहता है। हालांकि आमतौर पर इस सीजन को ट्रैकिंग के लिए सुटेबल नहीं माना जाता है। लेकिन कुछ ऑफबीट-सुरक्षित हिमालयी ट्रैकिंग स्पॉट्स पर जाकर आप अपनी इस चाहत को पूरा कर सकते हैं। ऐसे ही कुछ बेमिसाल ट्रैकिंग स्पॉट्स पर एक नजर।

मानसून में करिए फुल एंज्वॉय ये हिमालयन ट्रैकिंग स्पॉट्स

अनुभवी ट्रैकर्स के लिए परफेक्ट परांग ला ट्रैक, हिमाचल प्रदेश

परांग ला ट्रैक (18,400 फीट की ऊंचाई पर स्थित) अनुभवी ट्रैकर्स के लिए परफेक्ट माना जाता है, क्योंकि लद्दाख व स्पीति को जोड़ने वाला इसका पथरीला, तीखी ढलान वाला रूट थोड़ा चुनौतीपूर्ण हो सकता है। आप इस ट्रैक पर शुरुआत लेह के करजोक गांव से या स्पीति के चिचम/किब्बर गांव से कर सकते हैं। कठिन रास्तों के बावजूद आपको जादुई नजारे देखने को मिलेंगे। इस दौरान आप खिले हुए जंगली फूल, गहरी नीली त्सो मोरिरी झील के अलावा किआंग या तिब्बती जंगली गधों के झुंडों को भी कूदते-दौड़ते हुए देख सकते हैं। इसे विजिट करने का सबसे अच्छा समय जुलाई के मध्य से सितंबर की शुरुआत तक होता है। *

मोहक नजारा दिखाए मरखा घाटी, लद्दाख

जुलाई और सितंबर के मध्य में मरखा घाटी (17,060 फीट की ऊंचाई पर स्थित) की दूधिया सफेद नदियां, सुंदर लैंडस्केप और विशाल पहाड़ों की पृष्ठभूमि में हरी-भरी वादियां मन मोह लेती हैं। यहां से कांग यत्से पहाड़ का दिलकश नजारा भी दिखता है। यह ट्रैक लेह से आरंभ होता है और फिर जब आप ऊपर की तरफ बढ़ते हैं तो हेमिस नेशनल पार्क, सुदूर गांवों और आध्यात्मिक ताचा मठ से होते हुए यह सफर यादगार बनता चला जाता है। यहां ट्रैकिंग करते हुए आपको हिमालयन ब्लू शीप, हिमालयन ग्रिफ्फोन, स्नो लेपर्ड और पक्षियों की विभिन्न प्रजातियों का दीदार करने का अवसर भी मिलता है। *

हिडन डायमंड दरमा घाटी ट्रैक, उत्तराखंड

उत्तराखंड के कुमाऊं क्षेत्र में स्थित दरमा घाटी ट्रैक (14,000 फीट की ऊंचाई पर स्थित) एक छुपा हुआ हीरा कहा जाता है, जो आपको आकर्षक गांवों, घने जंगलों, रोलिंग घास के मैदानों और ग्लेशियर से पोषित धाराओं से रूबरू कराता है। इन सबकी पृष्ठभूमि में होती हैं हिमालय की विशाल ऊंची चोटियां। जब मानसूनी बारिश इस लैंडस्केप को भिगो देती है, तो यह वादी हरियाली और जंगली फूलों की सुगंध से भर जाती है। रास्ते में आपको बर्फ से ढंके पहाड़ मिलेंगे। आप इस दौरान स्थानीय समुदायों की विशिष्ट संस्कृति और मेजबानी का भी आनंद ले सकते हैं। जून से सितंबर इस ट्रैक पर जाने के लिए सबसे अच्छा समय है। *

हसीन वादियों से समृद्ध पिन घाटी, हिमाचल प्रदेश

मानसून में ट्रैकिंग के लिए एक अन्य बेहतरीन ट्रैकिंग स्पॉट पिन घाटी (15,780 फीट की ऊंचाई पर स्थित) है। यहां हरे-भरे जंगलों, विशाल घास के मैदानों, पथरीले रास्तों, बर्फ से ढंके मैदानों और ठंडे रेगिस्तानों का फोटो-फ्रेंडली नजारा देखने को मिलता है। यह ट्रैकिंग मुध नामक गांव से आरंभ होती है। पूरी तरह बर्फ सं ढंकी झोपड़ियों की पृष्ठभूमि में मटर और जौ के खेत और तेज हवाओं के साथ झूमते पेड़-पौधे आपका मन मोह लेंगे। इस ट्रैकिंग के दौरान आप प्राकृतिक गर्म पानी के चश्मों के लिए विख्यात खीरगंगा पर रुक सकते हैं। पिन नेशनल पार्क के साथ गेचांग, का और थंगो जैसे स्थान देखना न भूलें। यहां जाने के लिए सबसे अच्छा समय जुलाई से मध्य सितंबर तक माना जाता है। *

वन्य-जीवन से दीदार कराता तोसामैदान ट्रैक, कश्मीर

इस मौसम में ट्रैकिंग की सोच रहे हैं तो तोसामैदान ट्रैक (12,460 फीट की ऊंचाई पर स्थित) आपकी बकट लिस्ट में अवश्य होना चाहिए। कश्मीर के गुलमर्ग में स्थित यह ट्रैक विशाल पीर पंजाल रेंज, अल्पाइन घास के मैदान, शंकुधारी और चीड़ के जंगलों, चमचमाती झीलों और बर्फ से ढंके पहाड़ों से होकर गुजरता है। इस मार्ग पर ट्रैकिंग के दौरान विभिन्न हिमालयी वन्य जीवों जैसे कस्तूरी हिरण, लेपर्ड और विभिन्न प्रजातियों की मुर्गियां आदि को देखने का मौका आपको मिलेगा। यहां ट्रैकिंग करने का सबसे अच्छा समय जुलाई से सितंबर तक का होता है। *

सेल्फ इंप्रूवमेंट / नरेंद्र कुमार

किसी भी प्रोफेशन में ग्रो करने के लिए लगातार सीखना और खुद को बेहतर बनाने की क्षमता का होना जरूरी है। ऐसा तभी हो सकता है, जब आपको अपनी कमियां पता हों। कमियां पता लगाने के लिए बॉस ही नहीं कुलीग्स, सीनियर्स का फीडबैक भी बहुत महत्वपूर्ण होता है। इस बारे में आपको जरूर जानना चाहिए।

करियर ग्रोथ के लिए इंपॉर्टेंट है फीडबैक

आज के दौर में प्रोफेशनल दुनिया में कामयाबी के लिए सिर्फ मेहनत करना ही काफी नहीं है। कंपनियां अब अपने स्टाफ में ऐसे लोगों को चाहती हैं, जो हर समय सीखने को तैयार रहें। जो अपनी कमियों को पहचान सकें और किसी के द्वारा बताए जाने पर उसमें जरूरी सुधार करें। यही कारण है कि फीडबैक आज करियर ग्रोथ का एक महत्वपूर्ण जरिया बन चुका है। वास्तव में फीडबैक एक ऐसा आईना है, जिसमें हम अपनी प्रोफेशनल इमेज बहुत अच्छी तरह से देख सकते हैं। जो लोग इस आईने से डरते नहीं, वे लोग सचमुच इससे बहुत कुछ सीखते हैं।

क्या है फीडबैकः फीडबैक का मतलब केवल आपकी गलती बताया जाना नहीं होता। यह आपके प्रोफेशनल बिहेवियर, काम की प्रस्तुति और क्षमता का किया गया मूल्यांकन होता है, जिसमें सुझाव भी शामिल होता है। इसे अगर आप सकारात्मक तरीके से लेते हैं तो यह आपको बेहतर बनाने में मदद करता है और अगर आप इसे अपनी व्यक्तिगत अलोचना के तौर पर लेते हैं, तो इससे आपको नुकसान हो सकता है।

जरूरी है फीडबैकः डेढ़-दो दशक पहले नौकरियां आज के मुकाबले अपेक्षाकृत स्थिर हुआ करती थीं। लोग बीस-बीस, तीस-तीस साल तक एक ही कंपनी में गुजार देते थे। आज के समय में कंपनियां जरूरी नहीं है कि अगर किसी को अपने यहां रख लें तो उसे सालों-साल ढोती ही रहें। हां, आज भी दस पर्सेंट ऐसे कर्मचारी होते हैं, जो कई साल एक ही कंपनी में गुजार देते हैं। सवाल है, ऐसे थोड़े लोगों में क्या खूबी होती है कि आज भी कंपनियां इन थोड़े से लोगों को अपने साथ लंबे समय तक बनाए रखना चाहती हैं? दरअसल, आज कंपनियां उन्हीं कर्मचारियों को लंबे समय तक अपने साथ बनाए रखने में तरजीह देती हैं, जो अपनी प्रोफेशनल स्किल को लगातार बेहतर बनाने की कोशिश में रहते हैं और जब भी उन्हें कुछ सीखने का मौका मिलता है, जल्द से जल्द सीखने की कोशिश करते हैं। जो अपनी गलतियों में सुधार करने के लिए तैयार रहते हैं, समय और परिस्थितियों के मुताबिक काम के तौर-तरीके में जरूरी बदलाव करते हैं और टीम के साथ बेहतर तालमेल बनाए रखते हैं। वास्तव में ये क्वालिटीज फीडबैक के बेहतर उपयोग के नतीजे के रूप में सामने आती हैं।

फीडबैक बदलता है दिशाः कई बार लोगों को खुद अपनी कमजोरियों का अंदाजा नहीं हो पाता। ऐसे में अगर आप स्वयं को मिले फीडबैक के बाद अपने काम की गुणवत्ता के बारे में जरूरी समझकर, अपनी कमी को सुधारने की कोशिश करते हैं, तो यह कोशिश आपके लिए न केवल प्रमोशन बल्कि आगे चलकर टीम लीड करने की राह भी खोलेगी। यहां सीनियर्स को फीडबैक देने के तरीके के बारे में भी समझना जरूरी है। अकसर सीनियर्स गलत तरीके से या गुस्से में फीडबैक देते हैं। मसलन, किसी के काम में उन्हें कोई कमी नजर आती है, तो वह छूटते ही कह देते हैं, 'तुम हमेशा ही गलत काम करते हो।' इससे आपका कुलीग असहज हो जाता है। होना यह चाहिए कि किसी कुलीग या जूनियर को फीडबैक दें तो उसमें केवल कमी निकालने की बजाय उसके काम को और बेहतर बनाने के सुझाव पर फोकस होना चाहिए।

फीडबैक लेने का सही तरीकाः फीडबैक देने के सही तरीके की तरह ही इसे लेने का तरीका भी सही होना चाहिए। सही तरीका यह है कि हम अपने काम में खामी निकालने वाले व्यक्ति की बात को ध्यान से सुनें, उसे बीच में कतई न टोकें। आप अपने लिए दिए गए महत्वपूर्ण सुझाव को लिख लें, ताकि बाद में जब अकेले में हों, तो उसे और बेहतर तरीके से समझ सकें। कोई भी फीडबैक मिलने पर आप सवाल पूछ सकते हैं, लेकिन यह सवाल रिएक्शन या ऑब्जेक्शन न लगे बल्कि आपको दी जा रही सलाह को और स्पष्ट किए जाने के संबंध में होना चाहिए या फिर बेहतर करने की इच्छा से संबंधित होना चाहिए। *

पुराने दौर से लेकर आज के समय में भी दुनिया भर के देशों में जन्मदिन के उत्सव को अलग-अलग तरीके से मनाया जाता रहा है। कुछ जगहों की परंपराएं तो बहुत ही अजब-अनोखी हैं। इनमें से कुछ दिलचस्प परंपराओं के बारे में यहां बता रहे हैं।

बर्थ-डे सेलिब्रेशन के अजब-अनोखे तरीके

बच्चों का 'किंडरफेस्ट' सेलिब्रेशन, जर्मनी

जन्मदिन पर 'पिन्याटा' फोड़ने की प्रथा, मैक्सिको

रोचक / नेहा जैन

बर्थ-डे का नाम सुनते ही सबसे पहले आपकी कल्पना में चारों तरफ सजे हुए रंग-बिरंगे गुब्बारे और मेज पर रखा सजा हुआ केक आता होगा। केक काटना आज जन्मदिन के उत्सव का एक अनिवार्य हिस्सा बन गया है। लेकिन केक के आविष्कार के पूर्व या उसके बाद भी दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में लोग किस तरह बर्थ-डे सेलिब्रेट करते थे, यह जानना बहुत दिलचस्प है।

प्राचीन यूनान (ग्रीस): प्राचीन काल में यूनान देश के लोग जन्मदिन के अवसर पर चंद्रमा की देवी आर्टेमिस के सम्मान में गोल आकार का शहद वाला केक बनाते थे, जो चांद का प्रतीक माना जाता था। केक पर जलती मोमबत्तियां चांद की चांदनी की तरह चमकती थीं। उनका मानना था कि मोमबत्तियों का धुआं उनकी प्रार्थनाओं को देवताओं तक पहुंचाता है।

रोमन सभ्यता: प्राचीन रोम में भी जन्मदिन के अवसर पर आटे, मेवों और शहद से बने केक या मीठी ब्रेड खिलाने का चलन था।

प्राचीन मिस्र (इजिप्ट): प्राचीन मिस्र के फराओ (राजाओं) के राज्याभिषेक के दिन को उनका 'जन्मदिन' माना जाता था, जिसे भव्य उत्सव के रूप में मनाते थे। इस अवसर पर विशेष तरह के कई पकवान बनाए जाते थे।

जर्मनी का किंडरफेस्ट: 18वीं शताब्दी में जर्मनी में बच्चों के जन्मदिन पर विशेष उत्सव मनाया जाता था, जिसे 'किंडरफेस्ट' कहा जाता था। यहां बच्चे की उम्र के अनुसार केक पर मोमबत्तियां लगाई जाती थीं और एक अतिरिक्त मोमबत्ती गुड लक के लिए रखी जाती थी।

ऐसे भी करते हैं बर्थ-डे सेलिब्रेटः आज भी दुनिया के अलग-अलग देशों में जन्मदिन को अनूठे तरीकों से मनाते हैं। इनमें से कुछ के बारे में यहां बता रहे हैं।

चीनः चीन में बच्चे के बर्थ-डे पर केक की जगह लंबी उम्र के प्रतीक के रूप में 'लॉन्जिविटी नूडल्स' खाए जाते हैं। मान्यता है कि नूडल्स जितने लंबे होंगे, उम्र उतनी ही लंबी होगी। हालांकि अब वहां केक के साथ भी बर्थ-डे सेलिब्रेशन लोकप्रिय है।

ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंडः इन दोनों देशों में बर्थ-डे के अवसर पर फलों और क्रीम से सजी 'पावलोवा' केक बनाया और खाया जाता है।

जापानः यहां 3, 5 और 7 साल का होने पर बच्चों का जन्मदिन विशेष उत्सव के रूप में मनाते हैं, जहां वे पारंपरिक किमोनो पहनकर मंदिर जाते हैं। यह परंपरा शिकी-गो-सान कहलाती है।

मैक्सिकोः यहां जन्मदिन की पार्टियों में 'पिन्याटा' फोड़ने का रिवाज है। यह कागज से बना बड़ा-सा खिलौना या गुब्बारा होता है। इसे कैंडी और छोटे-छोटे खिलौनों से भरा जाता है, फिर ऊंचाई पर लटका दिया जाता है। फोड़ने पर इससे निकलने वाले उपहारों को बच्चे बड़े उत्साह से लूटते हैं।

दक्षिण कोरियाः यहां जन्मदिन की सुबह 'मियेओक-गुक' (सीवीड सूप) पीना अनिवार्य माना जाता है। यह मां के प्रति सम्मान जताने का तरीका है, क्योंकि प्रसव के बाद मांएं इसे खाती हैं।

डेनमार्कः डेनमार्क में यदि किसी के घर के बाहर राष्ट्रीय ध्वज लहरा रहा हो तो इसका मतलब है कि घर में किसी का जन्मदिन है।

कनाडाः कनाडा में कुछ जगहों पर बर्थ-डे पर उस व्यक्ति की 'नोज ग्रीसिंग' की परंपरा है। माना जाता है कि नाक पर मक्खन लगाने से आने वाले साल में उसकी मुसीबतें फिसल कर दूर चली जाएंगी। कनाडा और अमेरिका में लड़कियों के 16वें जन्मदिन को बड़े उत्सव के रूप में मनाया जाता है। इसे स्वीट सिक्सटीन फेस्टिवल के रूप में मनाते हैं।

लैटिन अमेरिकाः लैटिन अमेरिकी देशों में लड़कियों के 15वें जन्मदिन को विशेष धूमधाम से मनाया जाता है, जो उनके बचपन से वयस्कता की ओर बढ़ने का प्रतीक होता है। *

भारत में बर्थ-डे सेलिब्रेशन

अपने देश भारत में जन्मदिन पर मंदिर जाने, अपने से बड़ों का आशीर्वाद लेने और नए कपड़े पहनने आदि का रिवाज है। हालांकि महानगरों में आजकल बर्थ-डे पर केक काटना पॉपुलर हो गया है। लेकिन भारत में पारंपरिक रूप से इस अवसर पर खीर, मिठाई या हलवा खिलाया जाता है।

अनूठे बर्थ-डे केक्स

बर्थ-डे केक से जुड़ी कुछ बातें बहुत ही इंट्रेस्टिंग हैं। **भारत का सबसे भारी बर्थ-डे केकः** भारत का सबसे भारी और लंबा बर्थडे केक 5.7 टन का था। यह विशाल केक जनवरी 2020 में भारतीय अभिनेता 'रॉकिंग स्टार यश' के जन्मदिन के अवसर पर बेंगलुरू, कर्नाटक में बनाया गया था। इसे बनाने में 22,500 अंडे, 1,800 किलोग्राम मैदा और 1,150 किलोग्राम चीनी का इस्तेमाल किया गया था। इस केक को 'श्री राम भवन स्वीट्स एंड बेकरी' के 20 कारीगरों ने 96 घंटों में तैयार किया था।

दुनिया का सबसे महंगा केकः दुनिया का सबसे महंगा केक ब्रिटिश डिजाइनर डेबी विंघम द्वारा वर्ष 2015 में बनाया गया था, जिसकी कीमत लगभग 75 मिलियन डॉलर (करीब 625 करोड़ रुपए) थी। यह केक एक फैशन रनवे की थीम पर आधारित था, जिसमें 4,000 से अधिक असली हीरे और कीमती रत्न जड़े गए थे।

दुनिया का सबसे बड़ा बर्थ-डे केकः यह रिकॉर्ड सन् 1990 में अमेरिका के अलबामा राज्य के फोर्ट पायने शहर के 100वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में बने केक के नाम है।

सिने-ट्रेंड / गौरव द्विवेदी

हिंदी सिनेमा का स्वर्णिम दौर केवल महान अभिनेताओं का दौर नहीं था, बल्कि महान लेखकों का भी दौर था। 1950, 60 और 70 के दशक में बॉलीवुड की सबसे बड़ी ताकत उसके लेखक हुआ करते थे। उस दौरान फिल्मों की नींव प्रायः साहित्य पर रखी जाती थी और पटकथा लेखक फिल्म निर्माण की प्रक्रिया के केंद्र में हुआ करते थे। यही कारण है कि उस दौर की अनेक फिल्में आज भी प्रासंगिक लगती हैं, जबकि तकनीकी रूप से कहीं अधिक उन्नत आज की कई फिल्में कुछ वर्षों में ही भुला दी जाती हैं।

साहित्य-सिनेमा चलते थे साथ-साथः हिंदी फिल्मों के उस स्वर्ण युग के पीछे प्रोग्रेसिव राइटर्स एसोसिएशन और भारतीय साहित्यिक परंपरा का गहरा प्रभाव था। उर्दू और हिंदी साहित्य से जुड़े अनेक लेखक फिल्म उद्योग में आए। इनमें साहिर लुधियानवी, कैफी आजमी, ख्वाजा अहमद अब्बास, राजेंद्र सिंह बेदी, इस्मत चुगताई, कृशन चंदर, अली सरदार जाफरी, राही मासूम रजा, गुलशन नंदा, कमलेश्वर, मनोहर श्याम जोशी और शैलेंद्र के नाम प्रमुख थे। इन लेखकों ने फिल्मों को केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं रहने दिया, बल्कि समाज, राजनीति और मानवीय संवेदनाओं का सशक्त दस्तावेज बना दिया।

साहित्य का विस्तार होती थीं फिल्मी पटकथाः उस दौर में पटकथा लेखन सिर्फ घटनाओं का क्रम नहीं था, बल्कि साहित्य का स्वाभाविक विस्तार हुआ करता था। ख्वाजा अहमद अब्बास ने 'आवारा', 'श्री 420', 'जागते रहो' और 'बॉबी' जैसी फिल्मों में सामाजिक यथार्थ को स्वर दिया। राजेंद्र सिंह बेदी ने 'देवदास', 'मधुमती' और 'अनुपमा' जैसी फिल्मों की पटकथाओं में साहित्यिक गहराई जोड़ी। राही मासूम रजा ने 'मैं तुलसी तेरे आंगन की', 'गोलमाल' और बाद में 'महाभारत' (सीरियल) से अपनी पहचान बनाई।

साहित्य से निकली कालजयी फिल्मेंः यह वह दौर था, जब फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी पर 'तीसरी कसम' बनी, आर. के. नारायण के उपन्यास पर 'गाइड' बनी, बिमल मित्र के उपन्यास पर 'साहिब बीवी और गुलाम' बनी।

लेखकों की मेज से उपजा हिंदी सिनेमा का स्वर्णयुग

हिंदी सिनेमा का स्वर्णिम दौर केवल सितारों का नहीं, बल्कि लेखकों का भी स्वर्णिम समय था। साहित्य से निकली कहानियों और सशक्त पटकथाओं ने उस दौर की फिल्मों को कालजयी बनाया। आज जब बॉलीवुड सशक्त कहानी की कमी से जूझ रहा है, ऐसे में उसे फिर से साहित्य की ओर लौटने की दरकार है।

मन्नू भंडारी, अमृता प्रीतम, धर्मवीर भारती और प्रेमचंद जैसे साहित्यकारों की रचनाएं भी फिल्मकारों को प्रेरित करती थीं। सत्यजीत रे, ऋत्विक घटक और मृणाल सेन जैसे फिल्मकारों का प्रभाव भी हिंदी सिनेमा के गंभीर रचनाकारों पर दिखाई देता था।

पटकथा लेखन के स्टार सलीम-जावेदः 1970 के दशक में पटकथा लेखन को नई ऊंचाई सलीम-जावेद की जोड़ी ने दी। 'जंजीर', 'दीवार', 'शोले', 'त्रिशूल', 'डॉन' और 'शक्ति' जैसी फिल्मों ने साबित किया कि मजबूत कहानी और दमदार संवाद किसी भी फिल्म की सबसे बड़ी पूंजी होते हैं। यह संयोग नहीं है कि इन फिल्मों के संवाद आज भी लोगों की यादों में बसे हुए हैं।

बदलने लगीं प्राथमिकताएंः 1980 के दशक में हिंदी सिनेमा की दिशा बदलने लगी। वीडियो कैसेट संस्कृति, टेलीविजन का विस्तार और तेजी से बढ़ते व्यावसायिक दबावों के बीच कहानी की जगह फॉर्मूले ने लेनी शुरू कर दी। 'डिस्को डांसर' और 'हिम्मतवाला' जैसी फिल्मों की व्यावसायिक सफलता ने निर्माताओं को यह विश्वास दिलाया कि संगीत, सितारे और मनोरंजक मसाले, सशक्त कहानी की कमी पूरी कर सकते हैं।

नहीं है कहानियों की कोई कमीः वास्तव में बॉलीवुड की समस्या प्रतिभा की कमी नहीं, बल्कि साहित्य और समाज से दूरी है। हिंदी पट्टी में प्रेमचंद, रेणु, श्रीलाल शुक्ल, अमरकांत, काशीनाथ सिंह, उदय प्रकाश, चित्रा मुद्गल, गीतांजलि श्री, संजीव और नीलोत्पल मृणाल जैसे लेखकों का विशाल संसार मौजूद है। लोककथाओं, इतिहास, ग्रामीण भारत, छोटे शहरों, सामाजिक बदलावों और समकालीन भारत के असंख्य अनुभवों से भरी कहानियां आज भी लिखी जा रही हैं। जरूरत केवल उन्हें पर्दे पर लाने की इच्छा की है।

फिर से देना होगा कहानियों को महत्वः यदि बॉलीवुड को अपनी खोई हुई रचनात्मक ऊर्जा वापस हासिल करनी है तो उसे फिर से लेखकों की महत्ता को स्वीकारना होगा। आखिरकार 'मदर इंडिया', 'दो बीघा जमीन', 'गाइड', 'आनंद' जैसी फिल्मों को कैमरों ने नहीं, कहानियों ने अमर बनाया था। सिनेमा का भविष्य भी वहीं से निकलेगा जहां उसका स्वर्णिम अतीत जन्मा था यानी लेखकों की मेज से। *

(लेखक फिल्म नीति के जानकार हैं)

दक्षिण भारतीय फिल्मों में बरकरार कहानी का महत्व

दक्षिण भारतीय फिल्म उद्योगों ने कहानी की परंपरा को बनाए रखा। मलयालम सिनेमा में एम. टी. वासुदेवन नायर, पद्मराजन, लोहितदास और हाल के वर्षों में दिलीश पोथन तथा श्याम पुष्करण जैसे लेखकों-निर्देशकों ने साहित्य और समाज से जुड़ी कहानियों को जीवित रखा। तमिल सिनेमा में जयकांतन, सुजाता और बाद में वेट्रिमारन जैसे फिल्मकारों ने यथार्थवादी कथाओं की परंपरा को आगे बढ़ाया। इसी का परिणाम है कि 'दृश्यम', 'प्रेमम', 'कुंबलंगी नाइट्स', 'महाराजा', 'असुरन', 'जय भीम', '96', 'कांतारा', 'चार्ली 777' और 'पुष्पा' जैसी फिल्में अपनी स्थानीय संस्कृति में रची-बसी होने के बावजूद राष्ट्रीय और वैश्विक दर्शकों तक पहुंचती हैं। ये फिल्में दर्शाती हैं कि स्थानीयता ही वैश्विकता का रास्ता बन सकती है